ज्ञानामृत मासिक

वर्ष 40, अंक 04, अक्टूबर 2004, मूल्य 5.00

1. नई देहली- भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी राखी बंधवाने के पश्चात् स्लोगन का कार्ड पढ़ते हुए। साथ में हैं ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. शान्ति बहन तथा ब्र.कु. मन्जू बहन।

2. नई देहली- भारत के प्रधानमन्त्री भ्राता मनमोहन सिंह जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. मधु बहन। साथ में हैं ब्र.कु. बृजमोहन भाई तथा अन्य।

1. भैरहवा (नेपाल)- श्री 5 महाराजाधिराज ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव सरकार को गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करती हुई ब्र.कु. परिणीता बहन। **2. काठमाण्डु-** नेपाल के प्रधानमन्त्री भ्राता शेरबहादुर देउबा को राखी बांधती हुई ब्र.कु. राज बहन। **3. पटना-** बिहार के राज्यपाल महामहिम भ्राता एम. रामा जोइस को राखी बांधती हुई राजयोगिनी दादी निर्मलपुष्पा जी। **4. रायपुर-** छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) भ्राता के.एम. सेठ को राखी बांधती हुई ब्र.कु. कमला बहन। **5. चण्डीगढ़-** पंजाब के राज्यपाल महामहिम न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) भ्राता ओ.पी. वर्मा को राखी बांधती हुई ब्र.कु. अचल बहन। **6. मिरियालगुडा-** आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता सुरजीत सिंह बरनाला को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. धनलक्ष्मी बहन। **7. बैंगलोर (वी.वी.पुरम्)-** कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम भ्राता टी.एन. चतुर्वेदी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अम्बिका बहन। **8. रांची-** झारखण्ड के राज्यपाल महामहिम भ्राता वेदप्रकाश मारवाह को राखी बांधती हुई ब्र.कु. निर्मला बहन। **9. देहरादून-** उत्तरांचल के राज्यपाल महामहिम भ्राता सुदर्शन अग्रवाल, ब्र.कु. मन्जू बहन से राखी बंधवाने के पश्चात् वरदान पढ़ते हुए। **10. गाँधीनगर-** गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता नवलकिशोर शर्मा को ईश्वरीय प्रसाद देती हुई ब्र.कु. सरला बहन। **11. कुरुक्षेत्र-** हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भ्राता ए.आर. किदवई को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. सरोज बहन। **12. गोहाटी-** असम के राज्यपाल महामहिम लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) अजय सिंह को राखी बांधती हुई ब्र.कु. अल्पना बहन।

संजय की कलम से –

सच्ची विजय दशमी

भारत अध्यात्म प्रधान देश है। हमारे त्योहारों का भी आध्यात्मिक रहस्य है। आज त्योहार तो मनाये जाते हैं, परन्तु उनका रहस्य भूलाया जा चुका है। हर वर्ष दशहरा अथवा विजय-दशमी का उत्सव भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। कई दिन पहले से ही रामलीला शुरू हो जाती है। बच्चे-बूढ़े सभी बड़े उत्साह से रावण के मरने तथा जलने का इन्तज़ार करते रहते हैं और जब दशहरे का दिन आता है तो खूब खुशियाँ मनाते हैं। अवश्य ही रावण हमारा शत्रु है वरना किसी मित्र-सम्बन्धी के मरने पर तो मातम छा जाता है। देखा जाये तो बुत सदा दुश्मन का ही जलाया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि यह रावण शत्रु कौन है और इसे हर वर्ष क्यों जलाते हैं? साधारण रीति से यदि किसी से पूछा जाये कि रावण कौन था तो यही उत्तर मिलता है कि वह लंका का राजा था जो इतना शक्तिशाली था कि उसने जल, अग्नि, वायु तथा काल को अपने पलंग के पाँवों से बाँध रखा था। उसे दशानन अर्थात् दस सिर वाला कहते हैं। परन्तु क्या यह बात सत्य हो सकती है कि किसी व्यक्ति के दस सिर हों? ऐसा व्यक्ति भला सोता कैसे होगा? यदि रावण सचमुच दस सिर वाला था तब तो आज भी उसके वंश का

शेष पृष्ठ 24 पर

अमृत-सूची

**

विदेशी भाई-बहनों के लिए खुशखबरी

वैस्ट्रन यूनियन मनि ट्राँसफर सिस्टम की सुविधा शान्तिवन (आबू रोड) पोस्ट आफिस में उपलब्ध है। इस द्वारा आधे घण्टे के अन्दर देश-विदेश से मनि ट्राँसफर किया जा सकता है।

रुपया कैसे भेजें – 1. भेजने वाला व्यक्ति विदेश स्थित नजदीकी वेस्टर्न यूनियन लोकेशन पर जाये, एक फार्म भरे, रुपये एवं सेवा शुल्क अदा करे, **2.** भेजने वाला व्यक्ति यूनियन से रसीद एवं कोड नम्बर प्राप्त करें। भेजी गई रकम और कोड नं. फोन पर सूचित करें, **3.** भेजने वाला व्यक्ति भारत में ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश भाई या ब्रह्माकुमार बख्शी भाई को डाकघर से रुपये भुगतान लेने के लिए फोन पर कोड नं. सूचित करें, **4.** शुल्क आप बी.के. आत्म प्रकाश के नाम से शान्तिवन पोस्ट आफिस द्वारा भेज सकते हैं। सम्पर्क के लिए – **फोन:** 02974-228125, 228126, **फैक्स:** 02974-228116

मोबाइल : 09414154234, 09414154383

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	60/-	1,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	60/-	1,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	550/-	6,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	550/-	6,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजने हेतु पता है – सम्पादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन – 307510 (आबू रोड) राजस्थान। शुल्क के लिए सम्पर्क सूत्र: 09414423949

सम्पादकीय ....

ऐशो-आराम की भ्रामक धारणा

हिन्दी शब्दकोष में ऐश शब्द का अर्थ है 1. भोग–विलास, 2. सुख–चैन और 3. ईश्वर से सम्बन्ध रखने वाला। परन्तु आज इस शब्द का प्रचलन जिस अर्थ में समाज में हो रहा है उसका ईश्वर से दूर-दूर तक भी सम्बन्ध नज़र नहीं आता। यह शब्द भौतिक, अल्पकालिक और विवेकहीन सुख का पर्याय बन चुका है। आज के संसार की आँखों के सामने 'ऐशो–आराम' का चित्र कुछ इस प्रकार का है कि बड़ी–सी कोठी, शरीर को आराम देने वाले भौतिक साधनों से भरी हुई, नौकरों की भाग–दौड़, चमचमाती गाड़ी और क्लबों, पार्टियों, होटलों, सिनेमाघरों में आवागमन।

आज का मानव ऐश की इस भ्रामक धारणा में ऐड़ी से चोटी तक जकड़ा है और ऐश के इन साधनों को जुटाने में दिन-रात एक कर रहा है। वह खुली-आँखों से भी ऐशो-आराम के उपरोक्त साधनों की प्राप्ति के सपने देखता रहता है और जिसके पास ये साधन नहीं हैं उसे हेय समझता है। उससे दोस्ती करके अपने स्तर के नीचे आ जाने के भय से त्रस्त रहता है। आज अपना कार्य स्वयं करने वाले को अक्सर सुनने को मिलता है – "अरे, आप और यह कार्य! इन छोटे–मोटे कार्यों के लिए किसी को रख दो और ऐश फरमाओ।" अपने दो पाँवों रूपी बाइक पर दौड़ने वालों को भी अक्सर यह नसीहत मिल जाती है – "एक गाड़ी क्यों नहीं ले लेते, कब तक यूँ ही पगडंडियाँ मापते रहोगे, अब तो तुम्हारे ऐशो-आराम के दिन हैं।"

प्रश्न उठता है कि क्या शरीर को आराम देने वाले सभी साधनों, उपकरणों, पदार्थों की उपस्थिति मात्र ही ऐशो–आराम का आधार है या सच्चे ऐश का अर्थ इनसे कुछ भिन्न है? अवश्य ही ऐश और आराम केवल शरीर को नहीं वरन् मन को भी चाहिए। मानव केवल शरीर नहीं है। शरीर और आत्मा के योग का नाम जीवन है। यदि ऐशो-आराम के भौतिक पहलू पर ही केवल ध्यान दिया जाता है तो जीवन नारकीय बन जाता है। कालान्तर में, ऐशो-आराम में बिताए गए पलों की स्मृतियाँ भी दंश की तरह चुभने लगती हैं।

एक बहन हमेशा दावा करती थी कि उसके पति के पास खूब पैसे हैं और ये पैसे मौज-मस्ती से जीवन जीने के लिए हैं इसलिए स्वादेन्द्रिय की तृप्ति के लिए उसने शहर के किसी होटल को अछूता नहीं छोड़ा। इस मौज-मस्ती में अनेकों सहेलियों को भी भागीदार बनाया। सभी उसे ऐश के मामले में अपना आदर्श मानती थीं परन्तु यह आदर्श रूपी पुतला उस समय चरमरा कर गिर पड़ा जब मात्र 30 वर्ष की आयु में वह मधुमेह से पूरी तरह ग्रसित हो गई। न केवल मधुमेह वरन् मोटापा, बी.पी., तनाव, क्रोध आदि ने भी उस पर अपना पूरा अधिकार जमा लिया। अब वे ही सहेलियाँ, मुँह के सामने नहीं पर पीठ पीछे, यह कहने से नहीं चूकती हैं कि "आदमी को हर कार्य एक सीमा में करना चाहिए पर इसने तो खाने-पीने के मामले में सारी हदें तोड़ दीं, अब अपने किए का फल तो भुगतना ही पड़ेगा।" तो देखिए, कल तक जो मज़ा था आज वो सज़ा बन गया। कबीरदास जी का एक दोहा है –

चलती को गाड़ी कहें,
बना दूध का खोया।
रंगी को नारंगी कहें,
देख कबिरा रोया।।

कबीरदास जी आज होते तो

क्या कहते ? पहले तो साधनों को एकत्रित करने के लिए भीतर और बाहर की आँखों को मूँद कर दौड़ लगाओ, राम-धुन, ईश्वर–धुन की जगह साधन-साधन की धुन लगाओ। फिर उन साधनों के दास बन कर एक-एक करके अपनी कर्मेन्द्रियों को उनकी भेंट चढ़ाओ। उनको एकत्रित करने में लिए गए अनाप-शनाप पैसे अथवा कर्ज़ से चैन हराम करो, उनके बिगड़ जाने पर फिर जेब हल्की करो, व्यक्तिगत आधिपत्य की इच्छा पूरी न होने की दशा में घर के सदस्यों और मित्रों के कोपभाजन बनो। इस प्रकार, समस्याग्रस्त रहने का अविनाशी वरदान पाओ। होड़ की इस दौड़ में दूसरे की चीज़ अपनी से अच्छी बन गई तो फिर ईर्ष्या की आग में जलो या रातों-रात उससे भी अच्छी प्राप्त कर लेने का जोड़-तोड़ लगाओ। इन सब प्रयासों में सुखदाई नींद और मन की शान्ति सब स्वाहा कर दो। इतना सब होने पर भी एशो-आराम की जिन्दगी का लेबल गले में लटकाए रहो। ऐश न सही लेबल तो है। यह तथाकथित ऐश अन्य भी कई दूरगामी परिणाम देता है। कइयों को अनचाहा दुश्मन बना देता है, कई चोर-उचक्कों को आकर्षित कर लेता है।

अब समय है कि ऐश के भ्रामक अर्थों को हम बदलें और इसके सत्य शब्द – 'ईश्वर का' इसमें टिकें। सच्चा ऐश अर्थात् शाश्वत आनन्द वो ही पा सकता है जो ईश्वर का बन जाता है। ईश्वर से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। अब जो ऐश मिलता है उसे परमानन्द कहना ज्यादा सुहाता है। भौतिक जगत का तथाकथित ऐश तो क्षणिक खुशी मात्र है, जो साधन का कुछ समय प्रयोग करने के बाद ऊब पैदा करने लगता है। फिर मन नए-नए साधनों के पीछे भागता है। पाश्चात्य वृत्ति ऐसी ही है। वहाँ जल्दी-जल्दी पुरानी वस्तुओं को फेंक दिया जाता है और नई को अपना लिया जाता है। वैवाहिक सम्बन्ध भी इसी कारण विषाक्त हो गए हैं। वे नए साथी में नया सुख तलाशते हैं। परन्तु भारत की संस्कृति कहती है "नया नौ दिन पुराना सौ दिन"। इस सृष्टि में पुराने से पुराना कौन? अवश्य ही इसका उत्तर होगा ईश्वर। क्योंकि वह अविनाशी है, हमारे रंगमंच पर आने से पहले भी और बाद में भी उसकी निदेशक की भूमिका गुप्त रूप में चलती रहती है। सच्चा ऐश, सच्चा सुख-चैन उसी के सान्निध्य में है। उसकी गोदी में, उसी के ममता भरे आँचल में है। उसके प्रेम का निर्झर शाश्वत है, निरन्तर है, निर्बाध है, बेहद है। उसको बुद्धि रूपी अंगुली पकड़ा देने से जीवन परमानन्द की लहरों में लहराने लगता है। उसको अपना सर्वस्व मान लेने से आत्मा मालामाल हो जाती है। उसकी सर्व शक्तियों की उत्तराधिकारी बन आन्तरिक और बाहरी अभावों से सदा के लिए दूर हो जाती है। उसी के समान वन्दनीय, सम्माननीय, पूजनीय बन जाती है। आइये, आज से हम ऐशो-आराम की प्रचलित और भ्रामक धारणा को तोड़ दें और ईश्वर के प्रेम में, श्रीमत में सच्ची ऐश का अनुभव करें।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

***

आबू रोड- डीजल शेड के डी.एम.ई. भ्राता पुष्कर सिंगला को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र.कु. उर्मिला बहन, ब्र.कु. राजेश भाई तथा ब्र.कु. वसुवन बहन समूह चित्र में।
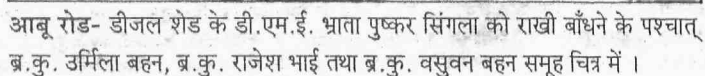
1. देहली (हरिनगर)- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डॉ. भ्राता अरुण निगवेकर राखी बँधवाने के पश्चात् ब्र.कु. सुन्दर लाल तथा ब्र.कु. भाग्य बहन के साथ। **2. शामली**- प्रसिद्ध अद्योगपति भ्राता जे.के. जैन को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. राज बहन। **3. फतेहपुर (महादेवन टोला)**- कैदियों को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. दुलारी बहन तथा अन्य बहनें। **4. देहली (भोलानाथ नगर)**- भारतीय नेत्रहीन विद्यालय के प्रबन्धक व विद्यार्थियों को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद समूह चित्र में प्रबन्धक भ्राता रामलाल जी, ब्र.कु. बीना बहन तथा ब्र.कु. प्रीति बहन। **5. देहली (कृष्णा नगर)**- निगम पार्षद भ्राता हरिश्चन्द जैन को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अनु बहन। **6. देहली (प्रह्लादपुर)**- क्षेत्रीय इलेक्ट्रिक इन्जीनियर भ्राता आर.के. जैन को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. आशा बहन। **7. बलिया (इस्टर्न)**- उप-जिलाधिकारी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. सुमन बहन। **8. पिलखुआ**- उद्योग-व्यापार मण्डल के अध्यक्ष भ्राता मुकुट लाल गर्ग को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. रुक्मिणी बहन। **9. देवबन्द (सहारनपुर)**- त्रिवेणी इन्जीनियरिंग के उपाध्यक्ष भ्राता अनिल कुमार तनवर को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. संगीता बहन। **10. रामपुर मनिहारन (सहारनपुर)**- पंजाब नेशलन बैंक के प्रबन्धक भ्राता कुलदीप अरोड़ा को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. सन्तोष बहन। **11. रायबरेली**- जिलाधिकारी भ्राता पीयूष गोयल को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. ज्योति बहन। **12. मेरठ (लाला का बाजार)**- डी.आई.जी. डॉ. भ्राता चन्द्रिका राय को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. मन्जू बहन।

निर्भय कैसे बनें ?

– ब्रह्माकुमार डॉ. गिरीश पटेल, मुम्बई

भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू अपने समय के सबसे निर्भय व्यक्ति थे, वे कभी किसी से नहीं डरते थे। परन्तु जब वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़ते थे तब ऐसे निर्भय नहीं थे। उन दिनों वहाँ एक नियम होता था कि सप्ताह में हर विद्यार्थी को एक प्रवचन देना होता था। जो नहीं दे पाता था उसे जुर्माना भरना पड़ता था। नौजवान नेहरू जी जुर्माना भर देते थे परन्तु प्रवचन देने से डरते थे। लेकिन बाद में धीरे-धीरे उन्होंने अपने भय की भावना को परिवर्तित किया और जल्दी ही अपने समय के सर्वश्रेष्ठ वक्ता बन गए। आप भी निर्भय बनने के लिए निम्नलिखित बिन्दु हमेशा ध्यान में रखें –

डर से कोई फायदा नहीं – अधिकतर विद्यार्थी परीक्षा के नाम पर भयभीत रहते हैं। परीक्षा के दिनों में डर के कारण उन्हें बुखार या अन्य रोग भी आ घेरते हैं। परन्तु गहराई से सोचें कि इस डर से क्या कोई लाभ है? कोई लाभ नहीं। यदि तैयारी 60% नम्बर ही प्राप्त करने लायक है तो भी यदि निर्भय होकर परीक्षा भवन में जायेंगे तो इच्छित परिणाम पा सकेंगे। इसी प्रकार, सेवा के क्षेत्र में भी निर्भय होकर ईश्वरीय सन्देश देंगे तो आत्माओं को तीर लगेगा।

डर किसी व्यक्ति या वस्तु में नहीं है, आपके मन में है – किसी बाह्य वस्तु में डर नहीं है। जिससे भी आप डरते हैं वह वास्तव में सच्चा शेर नहीं है, कागज का शेर है। परिस्थिति तो मुर्दे जैसी है, उसमें कोई जान नहीं है, आपके विचारों से ही उसमें जान आती है। परिस्थिति डर निर्मित नहीं करती बल्कि व्यक्ति की मन:स्थिति डर का निर्माण करती है।

विचारों को परिवर्तन करना है – आप जैसे विचार करते हैं, उसी दिशा में आगे बढ़ते हैं। आप रोज पुराने कपड़े पहनते हैं पर कभी भी चाय नहीं गिरती। जिस दिन एकदम नए कपड़े पहनते हैं उसी दिन चाय गिर जाती है। क्यों? क्योंकि आप बार-बार डर रहे थे कि कहीं चाय गिर न जाए। ऐसे आपने कई बार सोचा और उसी दिशा में आकर्षित हो गए। कई बार घर में दो-दो ताले लगे होते हैं फिर भी चोरी हो जाती है। क्यों? क्योंकि वे ज्यादा सोचते हैं, तब चोर तक भी वे प्रकम्पन पहुँच जाते हैं। कहते हैं कि आप कोई भी चीज से दूर नहीं जा सकते, नजदीक जा सकते हैं। यदि आप सोचें कि कॉकरोच से डर न लगे, तो वह आपके पास खिंच कर अवश्य आएगा। जब आप कहेंगे कि मैं निर्भय हूँ, मैं निर्भय हूँ, तो कॉकरोच दूर हट जाएगा।

एवरेस्ट शिखर पर सबसे पहले हिलेरी पहुँचा था। परन्तु अपने इस प्रयास में वह पहली बार असफल हुआ था। पहली बार वह नजदीक तो पहुँच गया था पर चोटी पर नहीं चढ़ पाया था। क्लब में उसके भाषण के दौरान लोगों ने पूछा – "जब आप चोटी पर नहीं पहुँचे तो क्या आप निराश नहीं हुए?" उसने कहा – "नहीं। पूरी कोशिश करने के बाद भी जब मैंने पाया कि अब चोटी तक जाना सम्भव नहीं है तो मैंने एवरेस्ट चोटी से बात की।" मैंने कहा – "एवरेस्ट! तेरी ऊँचाई बढ़ने वाली तो है नहीं, अगली बार मैं अच्छी तैयारी करके आऊँगा और तेरे पर विजय पाऊँगा।" सचमुच दृढ़ संकल्प का वह धनी दूसरी बार विजयी हो गया। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है – "अगर तुम्हारे विचारों में ताकत है तो तुम हथेली पर हिमालय भी उठा सकते हो।"

मूल कारण को समाप्त कीजिए – डर कभी भी बिना कारण के नहीं होता परन्तु जो भी कारण होता है वह अच्छा नहीं होता। जब भयभीत होकर कोई चीज किसी को पकड़ाई जाती

है तो बीच में ही गिर जाती है। डरने से लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती। भय के कई कारण हैं, प्रथम है – **बुरा अनुभव** – जब कोई बुरी घटना घट जाती है और उसका सामना उस समय नहीं किया गया हो तो बाद में उसके बारे में सोचने से डर लगेगा। एक व्यक्ति लिफ्ट में फँस गया। इसके छः मास बाद तक वह लिफ्ट में गया ही नहीं क्योंकि लिफ्ट से डरने लगा था। छः मास बाद एक दिन उसने कोशिश की तो डर से पसीने-पसीने हो गया और बीच में ही लिफ्ट को बन्द कर दिया। यदि डर का सामना तुरन्त नहीं करते हैं तो वह बढ़ता जाता है। एक व्यक्ति ने एक वक्ता से प्रश्न पूछ लिया। वक्ता ने कहा – "क्या बेकार प्रश्न है ?" पूछने वाला इतना डर गया कि उसने भविष्य में किसी से भी प्रश्न पूछने छोड़ दिए। बात असल में यह थी कि वक्ता को प्रश्न का उत्तर नहीं आता था। यदि प्रश्नकर्त्ता दूसरे किसी वक्ता से प्रश्न पूछने का साहस कर लेता और उत्तर प्राप्त कर लेता तो उसका डर सदा के लिए समाप्त हो जाता और इस प्रकार, पहले अवसर पर जो अप्रिय घटा उसका नकारात्मक असर दिल–दिमाग से नि[illegible] जाता।

भय का दूस[illegible]ण है – **बड़ों की शिक्षा** – ए[illegible] अपने बच्चे को कहा कि तुम बुद्धु हो, तुम कभी भी व्यापार नहीं कर पाओगे। वह एम.बी.ए. हो गया परन्तु इतनी ऊँची डिग्री लेकर भी व्यापार नहीं कर सका। उसे माँ के शब्द याद आते थे कि तुम बुद्धु हो। आज भी वह दस हज़ार रुपये मासिक पर नौकरी कर रहा है, न कि व्यापार।

एक अन्य बच्चे को उसके पिता ने कहा – "तेरा बड़ा भाई बहुत निर्भय है, तू डरपोक है, तू अकेला ट्रेन में नहीं जा सकेगा।" उसके अन्दर यह बात जम कर बैठ गई और आज भी वह मुम्बई से अहमदाबाद तक अकेला ट्रेन में नहीं जा सकता। कई माँ-बाप अक्सर कहते हैं – "लड़कियाँ झाड़ पर नहीं चढ़ती और लड़के रोते नहीं।" इस विचारधारा के कारण लड़कियाँ शक्ति होते भी चढ़ने से रह जाती हैं और लड़के रोकर दिल हल्का भी नहीं कर पाते क्योंकि ऐसा सिखाया जाता है।

कई बार डरावनी परिस्थिति भी हमें बहुत कुछ सिखाती है – डर एक सन्देश लेकर आता है कि परिवर्तन की आवश्यकता है। विपरीत परिस्थिति भी इस तरह वरदान बन जाती है –

एक नन्हा-सा बीज पड़ा धरती पर,
गर्मी ने उसे तोड़ डाला।
तो वृक्ष यूँ चढ़ा आसमान में।।
डरना नहीं, जमाने ने जिसे भी रोका,
वह बड़े–ते–बड़ा इन्सान
बन गया।।

परिस्थितियाँ कैसी भी आएँ, निर्भय हो जाओ, उस वृक्ष की तरह आसमान तक पहुँच जाओ। जवाहर लाल नेहरु ने इन्दिरा गाँधी को, जब वे मात्र ग्यारह साल की थीं, पत्र लिखा था – 'बेटे हिम्मतवान बनना, निर्भय बनना।' निर्भय व्यक्ति को कैसी भी विकराल परिस्थिति रोक नहीं सकती। निर्भय व्यक्ति कैसी भी परिस्थति में मार्ग निकाल लेता है इसलिए कभी भी अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि कहीं कोई डाँट तो नहीं देगा, असफलता तो नहीं मिलेगी।

डरावनी परिस्थितियों को चुनौति के रूप में स्वीकार करो – छत्रपति शिवाजी के समय में नियम होता था कि सांय सात बजे के बाद किले के दरवाजे बन्द हो जाते थे। फिर अन्दर कोई नहीं आ सकता था। किले में रहने वाली एक माँ एक दिन खेत में गई, उसे लौटने में देर हो गई, बाद में आई तो देखा कि दरवाजा बन्द था। उसने दरबान से प्रार्थना की कि घर में उसका बच्चा छोटा है, दरवाजा खोल दिया जाए। दरबान ने कहा – "यह नियम हम तोड़ नहीं सकते।" अब माँ क्या करे ? उसने चढ़ना आरम्भ किया। पाँवों में बहुत

तकलीफ हुई परन्तु किले को पार कर बेटे के पास पहुँच गई। शिवाजी को अगले दिन समाचार मिल गया। उसे बड़ा डर लगा कि यदि एक महिला किले को पार कर सकती है तो कल दुश्मन भी पार कर लेगा। महिला को बुलवाया गया। महिला कहा – ''मैं अपने बच्चे के प्यार में किले पर चढ़ गई।'' उसे कहा गया कि फिर से चढ़ कर दिखाओ। वह बोली – "अभी नहीं चढ़ सकती क्योंकि उस समय तो चुनौति थी, बच्चे के पास कैसे भी पहुँचना था।" जब चुनौति को स्वीकार करते हैं तो हमारी शक्तियाँ दस गुणा बढ़ जाती हैं। सदा याद रखें –

फेंक दो
हमारी जिन्दगी को आग में,
आग को भी बदल देंगे हम बाग में।
फतह करेंगे आखिर भी सभी मोर्चे
आने दो मौत को भी हमारे सामने।

डर का सामना करो – अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट ने बहुत अच्छी बात कही। उन्होंने कहा – "डर से मुक्त होने का सबसे अच्छा रास्ता है डर का सामना करना।" ऐसे ही सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भी कहा है कि जब आप डर का सामना करते हैं तो डर समाप्त हो जाता है।

रोम के लोगों ने इंग्लैण्ड पर चढ़ाई की। सभी पानी वाले जहाज में आए। जहाज का कैप्टन बड़ा समझदार था। जैसे ही सेना नीचे उतरी उसने सभी जहाज जला दिए ताकि दुश्मन को देख कोई भी जहाजों का सहारा लेकर वापस न लौटे। जहाज नहीं होंगे तो लड़ना ही पड़ेगा। वे लोग लड़े और विजय-श्री प्राप्त की।

कभी भी हिम्मत न हारो – कोलम्बस जब भारत को ढूँढ़ने निकला तो दो साल बीत गए, जीवन के आवश्यक साधन खत्म हो गए। साथी बिगड़ गए। कोलम्बस ने तब हाथ जोड़ कर कहा – "केवल एक मास का समय दो।" इतिहास साक्षी है कि इसके तीन दिन बाद वह अमेरिका की धरती पर उतर गया था। कहा गया है –

तलवार की कीमत
बढ़िया म्यान से नहीं,
उसकी धार से होती है।
कपड़ों की कीमत
चमकदार रंग से नहीं,
उसकी तार से होती है।।
आदमी की कीमत पैसे से नहीं,
उसके निर्भय व्यवहार से होती है।

संस्कारों को बदलिए – योग की गहराई में जाओ और स्मरण करो कि मैं निर्भय बन रहा हूँ। मेरा आत्मविश्वास बढ़ रहा है। साथ–साथ ऐसा चित्र भी निर्मित करो। संस्कार चित्रों की भाषा समझते हैं। उन्हीं विचारों को दिन में तीन-चार बार दोहराओ और ऐसा छः सप्ताह तक करो। निर्भय बनना है तो परमात्मा को साथी बनाओ। बाइबल कहती है – 'When God is with you, nobody can be against (जब भगवान आपके साथ है तो कोई भी आपका दुश्मन नहीं हो सकता है।)

निर्भय बनने के लिए
योग की कॉमेन्ट्री

मैं एक एक्टर के रूप में विशाल नाटक में पार्ट बजा रहा हूँ.... असली घर, साकार दुनिया के उस पार, परमधाम है.... वहाँ कोई आवाज नहीं.... सितारों की दुनिया में कोई संकल्प नहीं.... मैं निरसंकल्प हूँ.... मेरे प्यारे बाबा, मैं सदा निर्भयता का व्यवहार करूँगा, हर परिस्थिति का सहज सामना करूँगा.... मेरा आत्मविश्वास बढ़ रहा है, मैं शक्तिस्वरूप बन रहा हूँ.... अब मुझे समझ में आ गया है कि मुझे हर परिस्थिति में निर्भय होकर सामना करना है.... अब मुझमें वह हिम्मत आ गई है.... मैं सकारात्मक चिन्तन के द्वारा हर परिस्थिति को पार कर सकता हूँ.... मैं योग करते–करते पूर्णतः निर्भय बन जाऊँगा।

❖❖❖

'पत्र' सम्पादक के नाम

ज्ञानामृत के जुलाई 04 के अंक में 'कर्म और फल' लेख पढ़ा। यह मेरे जीवन के लिए एक चमत्कारी औषधि के समान साबित हुआ। एक भाई जमीन के सौदे में मुझसे एक लाख रुपये लेकर भाग गया। जिस दिन से रुपये गए तब से उस भाई के प्रति दिमाग में अनेक ख्यालातों ने घर कर लिया। मैं मन-ही-मन बाबा को कहता रहता था कि बाबा, मैं तो आपका बालक हूँ फिर भी आपने ऐसा क्यों होने दिया ? मैं कई प्रकार से मन को समझाता परन्तु एक लाख रुपये के ख्यालों से मुक्त नहीं हो पाता। दो माह गुजर गए। कोई रास्ता नहीं मिला। जुलाई माह की ज्ञानामृत में जब मैंने 'कर्म और फल' लेख पढ़ा तो मुझे असीमित खुशी हुई क्योंकि मुझे महसूस हुआ कि मैं कर्ज मुक्त हो गया। मुझे आन्तरिक तसल्ली हुई कि पिछले जन्मों का हिसाब-किताब मैने ब्याज सहित चुका दिया। बाबा भी मुरली के माध्यम से कहते हैं कि मीठे बच्चे, तुम्हें 63 जन्मों का कर्ज इस जन्म में उतारना है और अगले कल्प का खाता जमा करना है, इसमें दु:ख किस बात का ? बस, मेरी आँखें खोल दी बाबा ने। मैं बाबा का, ब्राह्मण परिवार का बहुत-बहुत आभारा हूँ।

– ब्रह्माकुमार बलराम,
पिपल्दा, म.प्र.

मैं ज्ञानामृत का नियमित पाठक हूँ। ज्ञानामृत ने मेरे ज्ञान में आने में बड़ी भूमिका निभाई। मेरे एक मित्र ने मुझे यह पत्रिका पढ़ने को दी। मुझे बहुत अच्छी लगी और दिल से आवाज़ निकली कि यही सत्य है। तब से मैं ईश्वरीय ज्ञान में चल कर अपना जीवन श्रेष्ठ बना रहा हूँ। बाबा को भी कोटी-कोटी धन्यवाद कि उसने मुझे इतना ऊँचा उठाया।

– ब्रह्माकुमार मनोज,
कोनपटी, आसाम

मैं उन बहनों का किन शब्दों में धन्यवाद करूँ जिन्होंने ग्रीष्म ऋतु की चिलचिलाती धूप में आकर हमें प्रेरित कर ज्ञानामृत का सदस्य बनाया। पत्रिका का मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया। पढ़ कर मन मुदित हो गया, तन उल्लसित हो गया और प्राण पुलकित हो गए। भौतिक रूप में पत्रिका का आकार तो लघु है किन्तु तात्विक दृष्टि से पत्रिका गागर में सागर की लोकोक्ति को पूर्णत: चरितार्थ करती है। यह वेदान्त का ऐसा प्रशान्त महासागर है जिसमें अलौकिक दिव्य रत्नों का भण्डार है। यह पत्रिका अपने पाठकों को कर्म-ज्ञान-भक्ति की त्रिवेणी में स्नान करा कर मुक्ति और जीवनमुक्ति प्रदान करती है। सागर के अन्तस-तल में बिखरे पड़े रत्न उन्हीं कुशल गोताखोरों (मरजीवा) को प्राप्त होते हैं जो श्रद्धा, विश्वास और दृढ़ मनोयोग से इसमें प्रवेश करते हैं। इस पत्रिका के वैसे तो सभी लेख दिव्य कोष हैं किन्तु 'कर्म और फल' लेख आज के इस अकुलीन युग में विशेष प्रासंगिक है, मंत्रवत् ग्रहणीय है, चिन्तन में उतारने योग्य है।

– पं. राजेश्वर प्रसाद भट्ट,
अनकिन, कानपुर

जून मास के अंक में 'हम गरीब क्यों हैं ?' यह लेख पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। अगर इन्सान कर्मों के प्रति जागरुक हो जाए तो सदा के लिए सुखी और शान्ति से जीवन जी सकता है। अपने ही कर्मों की उलझनों में उलझे इन्सानों को देख कर दया आती है कि इन बेचारों को भी जल्दी से बाबा का ज्ञान मिले। ऐसे प्रेरणादायी लेखों से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। आप इसी तरह अपनी कुशाग्र बुद्धि से हम पाठकों के परिवर्तन हेतु लेख लिखते रहना जी।

– ब्रह्माकुमार पुरुषोत्तम,
चालीसगाँव

***

दानव जैसी आत्मा को देव बना दिया

– ब्रह्माकुमार रामभूल, गोन्दर (करनाल)

मेरा लौकिक जन्म सन् 1964 में एक ऐसे परिवार में हुआ जहाँ पर शराब पीना, माँस खाना और औरत को कुछ ना समझना, यह आम बात थी। मैं बचपन से ही इन व्यसनों में फँस गया और इतना फँस गया कि सुबह कुल्ला भी कई बार तो शराब के द्वारा ही होता था। मात्र 14 साल की आयु में मेरी शादी एक धार्मिक विचारों वाली कन्या से हो गई। शराबियों के साथ बैठना, उठना, सुबह से लेकर रात्रि तक शराब पीना, माँस खाना, गाली-गलौज करना, बीड़ी-सिगरेट पीना और औरत को डाँटना–पीटना, यही मेरी दिनचर्या बन गई थी। मेरे ऐसे व्यवहार से घर में कलह-क्लेश इतना बढ़ गया कि युगल ने कई बार आत्महत्या करने की कोशिश की पर कर्मों के हिसाब से वह बचती रही। धीरे–धीरे 2 कन्याओं और 3 लड़कों का जन्म हुआ और घर बेहद नरक बन गया। मैं भी जीवन से दुःखी रहने लगा। मेरी युगल ने सोचा कि इस गाँव से और यहाँ के गलत संग से दूर चले जाएँ तो शायद सुधार हो जाए। इस लक्ष्य से, उसके बार-बार कहने पर हमने सन् 1996 में गाँव छोड़ कर करनाल शहर में मकान बना कर रहना शुरू कर दिया। पिताजी की तरफ से मुझे 32 एकड़ नहरी ज़मीन प्राप्त है जिस कारण आर्थिक स्थिति अच्छी है। सोचा था कि शहर में बच्चे ठीक से पढ़ लेंगे और मुझमें सुधार होगा लेकिन उल्टा ही हो गया। गाँव में तो देसी शराब पीता था परन्तु यहाँ आकर तो अंग्रेजी शराब पीना चालू हो गया और ज्यादा ही माँसाहारी बन गया। कई बार हरिद्वार जाकर गंगा में स्नान कर, प्रतिज्ञा की पर पीने की लत से नहीं छूट सका। कई गुरुओं के पास भी गया लेकिन सुधार रूपी आशा की किरण कहीं भी दिखाई नहीं दी।

मेरी युगल श्री कृष्ण तथा देवियों की भक्ति करती थी। एक दिन स्वप्न में उसे एक सफेद वस्त्रधारी बहन दिखाई दी और उसने मुझसे ऐसी बहनों के बारे में पूछा। मैं करनाल से जब गाँव जाता था तो रास्ते में ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी आश्रम पड़ता था। मैंने कहा – जानता हूँ, रोज आश्रम में उनको देखता हूँ। युगल ने मुझे कहा कि चलो, ब्रह्माकुमारियों के पास चलते हैं। मैंने कहा – यह तो औरतों का सत्संग है, मैं नहीं जाता। मैं पूरा देह अभिमानी था। उसने कहा – हमको वो पकड़ कर बिठा तो लेंगे नहीं। नहीं ठीक लगा तो वापस आ जायेंगे। उसके काफी कहने पर मैं आश्रम चला गया। आश्रम
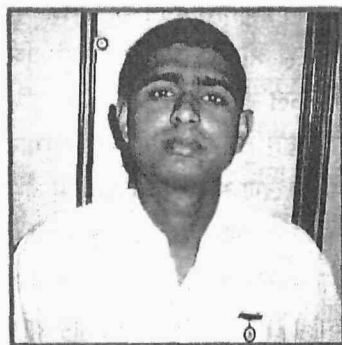
के भाइयों व बहनों ने ज्ञान समझाया तो मुझे अच्छा लगने लगा। मैं आश्रम पर जाता रहा और सन् 1999 में ज्ञान-योग शिविर में, मैं युगल सहित शान्तिवन आया। रास्ते भर भी शराब पीता आया था लेकिन वह शराब जिंदगी की आखिरी शराब थी। ज्ञान और योग शिविर में बहनों के प्रवचन सुने और समझा कि मैं इस देह से न्यारी आत्मा हूँ, देह तो वस्त्र है। ज्योतिर्बिन्दु आत्मा अलग है और शरीर अलग है, मैं दैवी कुल की आत्मा हूँ। इन बातों ने मेरी काया पलट दी और मैंने सोचा कि मैं श्री कृष्ण, श्री राम के कुल की आत्मा हूँ और सच्चे मोती चुगने वाला हँस हूँ। मैं अज्ञानतावश अपने को कागा समझ कर गन्दला पानी पी रहा हूँ। वहाँ भाई, बहनों और दादियों का निःस्वार्थ प्यार देख कर मेरी आँखें नम हो गईं। वहीं पर हम दोनों ने प्रतिज्ञा

कर ली कि अब विकारों में नहीं जायेंगे।

घर लौट कर मुझे पश्चाताप होने लगा कि युगल को मैंने कितना सताया है! मैं निर्विकारी बनने की प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा और पत्नी के प्रति मेरी दृष्टि बिल्कुल बदल गई। आत्मा की दृष्टि से देखते हुए मैं उसको मान-सम्मान भी देने लगा और घर के कार्यों में जैसे कि खाना बनाना, कपड़े धोना आदि में पूरा सहयोग भी देने लगा। साथ-साथ ज्यादा समय आश्रम पर ही ज्ञान-योग के अभ्यास में बिताने लगा। विकारी दोस्तों ने बहुत कोशिश की मुझे डिगाने की पर मीठे शिव बाबा की कृपा से मैं अडिग हो गया। मेरा घर जो नरक था वो स्वर्ग बन गया। पड़ोसी कहने लगे कि इनको कैसा जादू लग गया है। यह इतना विकारी मनुष्य जैसे कि देवता बन गया है। इसका खान-पान, रहन-सहन, चलना-फिरना, उठना–बैठना एकदम शुद्ध हो गया है। मेरे नजदीकी मित्रों-रिश्तेदारों को एक साल तक यकीन नहीं आया कि यह ऐसा नशेबाज भी पीना छोड़ सकता है। वे कहते थे कि तू घर में रात को देर से पी लेता होगा। मैं उनको कहता था – भइया, मैं पीता नहीं हूँ लेकिन यदि आप विश्वास नहीं कर रहे हैं तो कोई बात नहीं, कुछ समय में विश्वास करने लग जायेंगे। कुछ समय और बीता और वे विश्वासपूर्वक अपने ही मुख से कहने लगे कि यह तो सचमुच ही देवता बन गया है।

ज्ञान-योग का अभ्यास करते-करते मुझे दिव्य अनुभव होने लगे। कई बार अमृतवेले प्यारे बाबा की मीठी आवाज आती – मीठे बच्चे! रामभूल! मेरी युगल को भी दिव्य अनुभव होने लगे। एक दिन मैं घर पर नहीं था। वह मकान की कुन्डी लगाना भूल गई। प्यारे बाबा ने अव्यक्त रूप में उसको अनुभव कराया कि बच्ची, कुन्डी नहीं लगाई है। उसने उठ कर देखा कि सचमुच कुन्डी खुली हुई है। इसके बाद उसने टेपरिकॉर्डर में बाबा की साकार मुरली की कैसेट लगाई और लेटे-लेटे सुनने लगी। एकदम उसे सिर पर रूई जैसे हाथ का अनुभव हुआ और आवाज़ आई – बच्ची, सो जा। वह एकदम सो गई। प्यारे बाबा का कितना धन्यवाद करें। उसने क्या से क्या बना दिया। बाबा कैसा जादूगर है! इसके बाद हम दोनों अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाने शान्तिवन गए। वहाँ पर तपस्याधाम में हमको परमधाम का अनुभव हुआ। समय आगे बढ़ता गया और हम भी ज्ञान-योग के पंखों से ऊँची उड़ान भरते गए।

सन् 2002 में मैंने नई कार खरीदी थी। एक बार मैं ख़ुद ही कार को चला रहा था। शामली शहर से लगभग चार किलोमीटर दूर सुनसान स्थान पर हमारी कार, एक बस और एक जीप के बीच में पिस गई। कार में मेरे समेत छः सदस्य थे परिवार के। उस समय मेरी मानसिक स्थिति बाबा की याद से बड़ी शक्तिशाली थी। मैंने देखा कि मेरी युगल, भाभी और माँ तीनों एकदम पिसी पड़ी थीं। मन में एकदम आया कि ये तीनों आत्माएँ चली गई हैं। भाभी जी ने वहीं शरीर छोड़ दिया था। दूसरे सब तड़फ रहे थे। बड़े लड़के कृष्णा (साढ़े ग्यारह साल) के सिर के दो हिस्से हो गए थे। कान अलग-अलग लटके हुए थे। बाजू टूट गई थी। खून ही खून फैल गया था। मैंने सोचा कि यह भी थोड़ी देर में शरीर छोड़ देगा लेकिन बाबा ने उसे बचाया। दूसरे लड़के की भी हड्डी वगैरह टूट गई थी पर चोटें कम आई थीं। मेरी एक बाजू कोहनी से नीचे थी ही नहीं। दूसरे हाथ पर ध्यान गया तो देखा कि वह ठीक था। प्यारे बाबा ने हमें अशरीरी भव, विदेही भव, साक्षीद्रष्टा भव के वरदानों से खूब शृंगारा है। मैं अशरीरी हो कर साक्षी-द्रष्टा हो गया। मानो कि एकदम ईश्वरीय उपहार में मुझे मनोबल मिला। मैंने टूट कर लटकती हुई अपनी बाजू को सहारा देकर टाँग पर रख लिया। कन्धे की हड्डी भी टूट गई थी। उसको भी, जो एक हाथ ठीक था, उससे थोड़ा सेट किया। फिर ध्यान टाँगों की तरफ गया तो पाया कि एक कुल्हा टूट गया था, बिल्कुल चूरा हो गया था। मैंने कार से बाहर निकलने की कोशिश की लेकिन

नहीं निकल पाया। उस प्रदेश में सिवाय बाबा के और कौन था मेरा? परन्तु कुदरत की तरफ से कहो या प्राण प्यारे बाबा की तरफ से कहो, हमारे गाँव के दो आदमी वहाँ दिखाई दिए। वे एकदम हमें निकालने में लग गए। नजदीक ही किसान गन्ने का काम कर रहे थे, वे भी आ गए। सभी लग गए कार को तोड़ने और उन्होंने हमको निकाल लिया। तभी अचानक एक मेटाडोर आई। सभी ने चिल्लाना शुरू किया कि जल्दी करो, जो बच रहे हैं उनको मेटाडोर में बिठाओ। माताजी, मैं, युगल और दोनों लड़के मेटाडोर में नजदीकी शहर शामली में गए। धुन्ध और सर्दी का मौसम था। मैंने मेटाडोर वाले भाई के मोबाइल से गाँव में, आश्रम में, घर में फोन से सूचना दे दी दुर्घटना की। वे सब पहुँचने लगे। भाभी ने तो मौके पर ही देह त्याग दिया था। माँ और युगल ने लगभग डेढ़ घण्टे बाद आराम से शरीर छोड़ दिया। जहाँ दुर्घटना हुई थी वहाँ पर लोग उन वाहनों के चालकों को पीटने लग गए। मैंने कहा – आप इनको मत मारिए। मैंने कहा कि किसी जन्म का हिसाब अब पूरा हुआ है। आगे हम और हिसाब क्यों बनाएँ। मैंने उन चालकों को खुद ही वहाँ से भाग जाने को कह दिया। बाबा के महावाक्य मुझे याद थे कि बच्चे – अपकारी पर उपकार करो। उस खूने नाहक दृश्य के बीच भी भगवान ने अपनी श्रीमत का पालन करवाया। शुक्रिया बाबा, बार-बार शुक्रिया।

जिस डॉक्टर ने मेरा इलाज किया, मैंने उसको कहा था कि आप मेरे को बिना बेहोश किए ऑपरेशन करना। बड़ी प्रार्थना करने के पश्चात् उसने थोड़ा-सा मान लिया। मैंने कहा कि मुझे विदेहीपन का अभ्यास है, मैं अपने शरीर पर इसका प्रयोग करना चाहता हूँ। मेरे बहुत कहने पर उसने टाँग में एक पिन लगाई। हड्डी में सुराख करके वे पिन लगाते रहे और मैं उनके साथ ऑपरेशन थियेटर में ही योग की बातें करता रहा। वे मेरी तरफ देखते जा रहे थे और आपस में बातें भी कर रहे थे कि यह आदमी है या फिर कोई फ़रिश्ता? इतना भयानक हादसा हो गया, तीन औरतें चली गईं, लड़का दूसरे अस्पताल में मौत और जिंदगी से जूझ रहा है पर इसको देखो, एकदम शान्तस्वरूप है। इसके बाद उन्होंने मुझे नशा दे दिया क्योंकि बड़ा ऑपरेशन था। होश आने पर मैंने कोई भी दर्द की दवाई लेने से मना कर दिया। डॉक्टरों ने कहा था कि बिना दवाई के नींद नहीं आएगी पर मुझे सहज नींद आती रही। डॉक्टर बहुत प्रभावित हुआ और कहने लगा कि तीस साल के चिकित्सा क्षेत्र के अनुभव में मेरे सामने पहला ही ऐसा आदमी आया है। इसके बाद मुझे छुट्टी मिल गई और घर आने पर भी मैं बहुत जल्दी ठीक हो गया। मुझे हर पल यह मन्त्र स्मृति में था कि 'जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आन्धी और तूफान।' हमारी निमित्त बहन ने आश्रम से योगयुक्त भोजन हमारे पास भिजवाया जिससे हमको बहुत शक्ति का अहसास हुआ। बच्चे उस समय छोटे थे। बाबा ने कहा है कि 'दृढ़ता ही सफलता की चाबी है।' हमने छोटे बच्चों को ही कपड़े धोना, खाना बनाना, झाड़ू लगाना आदि कार्य सिखा दिए। सभी मिल-जुल कर कार्य करते रहे और जीवन पुन: ठीक रास्ते से गुजरने लगा। अब सभी बच्चे सहयोगी हैं, बाबा की मुरली सुनते हैं। घर पर बाबा का कमरा है, वहाँ योग का अभ्यास करते हैं। जब मैं चलने-फिरने लग गया था तो मैंने सब शुभचिन्तक नाते-रिश्तेदारों से कह दिया था कि मेरी लम्बी मंजिल है, मैं खुद इसको पाऊँगा। आप किसी प्रकार की फिकर न करें। कितना उस सर्वशक्तिवान बापदादा का धन्यवाद किया जाए, शब्द नहीं हैं। मुझ रावण जैसी आत्मा को राम बना दिया। दानव को एकदम देव बना दिया। अब तो दिल का एक ही संकल्प है अर्थात् शेष जीवन का एक ही ध्येय है कि बाबा को प्रत्यक्ष करने में मददगार बनूँ। धन्यवाद, कोटी– कोटी धन्यवाद बापदादा को।

✦✦✦

समस्या और समाधान

– ब्रह्माकुमार बिहारी, गोरखपुर

कई बार आप उदास हो जाते हैं। कोई आपसे पूछे तो जवाब देते हैं – एक समस्या आ गई है। प्रश्न उठता है कि समस्या क्या चीज है ? आप जो और जैसा चाहते हैं वैसा होता नहीं है, यही समस्या है। जैसे शरीर में रोग है, आप चाहते हैं उससे मुक्त होना पर हो नहीं पाते हैं, लड़का शराबी है, आप चाहते हैं कि वह शराब पीना बन्द कर दे पर वह नहीं करता है। आप चाहते हैं कि मैं जो ना चाहूँ, वह नहीं हो, पर हो जाता है। प्रियजन को असाध्य रोग हो, व्यवसाय में घाटा हो, आप नहीं चाहते, पर हो जाता है। कुल मिला कर समस्या यही है कि आप जो चाहते हैं, वह मिलता नहीं है और जो मिलता है, वह भाता नहीं है। परन्तु पूर्व निश्चित सृष्टि ड्रामा में ऐसा कोई विधान नहीं है कि आप जो चाहें वही हो और जो ना चाहें वह नहीं हो। अत: न पूर्ण होने वाली चाहनाओं के जाल में, व्यर्थ संकल्पों की उधेड़-बुन में आप खुद फँस जाते हैं और कहते हैं कि समस्या आ गई है। कई बार परिस्थिति ऐसी निर्मित हो जाती है जो समस्या का रूप ले लेती है। जैसे कोई व्यक्ति ठीक समय पर घर से निकले पर रास्ते पर यातायात रुका होने के कारण देर हो जाए और स्टेशन से गाड़ी छूट जाए। इससे उसके कई आवश्यक कार्य रुक जाते हैं। कभी-कभी गलत अनुमान और व्यर्थ संकल्प भी समस्या निर्मित करते हैं। घर में किसी बीमार के ऑपरेशन को व्यक्ति समस्या के रूप में आँकने लगता है और कई बार बहुत व्यर्थ सोचता है, जैसे कि – ऑपरेशन काल में यदि उसने शरीर छोड़ दिया तो क्या होगा ? यदि ऑपरेशन के बाद भी ठीक न हुआ तो क्या होगा ? यदि ज्यादा खर्च हो गया तो... आदि-आदि। बाद में परिणाम सामने आता है। ऑपरेशन सफल हो जाता है। लेकिन समस्या रूपी दहाड़ते शेर की कल्पना करके अपना कीमती समय तो बरबाद कर ही लिया न।

समाधान

समस्या को समाप्त करने का साधन है – मन का सशक्तिकरण। रोज की मुरली सुनने और मनन करने से मनोबल बढ़ता है। यदि शारीरिक रोग है और दवा से रोग नहीं जा रहा है, तो याद रखें कि 'जो दवा से चला जाए वह रोग है, जो दवा से न जाए वह भोग है'। कर्मों का हिसाब-किताब बीमारी के रूप में सामने आता है। कर्म अनजाने में हो गया पर भोगना तो अनजाने में पार नहीं हो सकती। उसको भोगते समय तो मन-बुद्धि पूरी तरह सचेत रहते हैं अर्थात् पीड़ा का अनुभव करते हैं। परन्तु हम याद रखें कि चाहे हँस कर करें या गम में डूब कर करें, यह खाता हमें ही समाप्त करना है। चेहरा खुश्क बना लेने से वा मुँह लटका लेने से क्या रोग चला जायेगा ? क्या समस्या टल जायेगी ? भगवान कहते हैं – "भल शरीर चला जाए पर खुशी न जाए" इसलिए भोग भोगते भी मस्ती न जाए। तभी मस्त कलन्दर का टाइटल चरितार्थ होगा। याद रखें –

न दिल शिकस्त होके जिओ,
न मुँह लटका के जिओ,
रोग-शोक भी आये,
तो मुस्करा के जिओ।

मान लीजिए कि लड़का शराबी है। देर रात शराब के नशे में घर आता है, तोड़–फोड़ एवं शोर-शराबा करता है। आप बोलते हैं तो आप पर हाथ भी उठा लेता है। यह एक बहुत बड़ी समस्या है। परन्तु हमारी रचना यदि हम पर हावी हो रही है तो गलती किसकी ? अवश्य ही हमारे द्वारा उसका लालन-पालन श्रेष्ठ संस्कारों से नहीं हुआ। चलिए, वो तो भूतकाल की बात हो गई पर वर्तमान में क्या करना है ? इसके लिए कई बार हमारा मोह ही समस्या को बढ़ा देता है। यदि ऐसे बच्चे के प्रति हम मोह को समाप्त कर अनासक्त भाव धारण कर लें तो हमें दु:ख नहीं

होगा। दु:ख यही सोच कर होता है कि मेरा बच्चा, मेरे साथ ऐसा करे। पर वह आपका है ही नहीं। अपने कर्मों से वह रावण का हो गया है। आप प्यारे शिव बाबा को अपना बच्चा बनाइये और उसी से स्नेह लगाइये। शराबी को यदि सुधारने के प्रयास सफल ने हों तो किनारा कर लीजिए। जिस समस्या को आप बदल नहीं सकते उसके बारे में सोच कर दु:खी न हों, याद रखिये – समय एक श्रेष्ठ औषधि है।

सबका पार्ट निश्चित जान,
नहीं होना है अब परेशान।
मनसा-सेवा की शक्ति से,
करना है सबका कल्याण।।

चाहे जो भी परिस्थिति आ जाए, चाहे कोई आत्मा हिसाब-किताब चुक्तू करने, सामना करने आती रहे, चाहे शरीर का कर्मभोग सामना करने आता रहे, हर हाल में , सर्व प्रश्नों से पार रहने वाला ही समस्याजीत होता है।

उपरोक्त उदाहरणों के आधार पर अगर पूछा जाय कि छोटी-सी समस्या पहाड़ जैसी क्यों दिखती है ? तो इसका उत्तर होगा – "संकल्प शक्ति की कमी के कारण।" इसी उत्तर में समस्या का समाधान छिपा हुआ है। सुख-दु:ख मन की स्थिति पर निर्भर करते हैं। जैसा सोचेंगे, वैसा ही महसूस करेंगे, जैसा सोचेंगे वैसा बनेंगे। व्यर्थ संकल्पधारी व्यक्ति समस्या का दृश्य देख गमगीन हो जाता है और समर्थ संकल्पधारी ऐसे दृश्य से गुण ग्रहण कर लेता है। व्यर्थ संकल्प समस्या का जन्म है तो समर्थ संकल्प समस्या का अन्त। व्यर्थ कारण है और समर्थ निवारण है। आप श्रेष्ठ एवं समर्थ संकल्पों से समस्या का रूप बदल सकते हैं। समर्थ से व्यर्थ को मिटा सकते हैं क्योंकि आपके समर्थ संकल्पों में समस्या को सुलझाने की एक अद्‌भुत शक्ति है।

भगवान कहते हैं – ''माया अनेक रूपों में वार करती है, समस्या भी माया का ही एक रूप है। माया पहले पहल संकल्पों में ही प्रवेश कर परेशान करती है। अत: परखने की शक्ति से माया के रूप को पहचानो और माया पर जीत पाओ।" संगमयुग में माया का अन्तिम संस्कार कर देना ही योगी तू आत्मा की सच्ची साधना है। साधना से ही माया का अन्त होगा। माया का अन्त माना समस्या का समाधान। ✱✱✱

पश्चाताप

– ब्रह्माकुमार नरेश, पलवल

देह के नशे में और दौलत के आकर्षण में, धर्म-कर्म को भूल कर मानव जघन्य अपराध कर बैठता है। इन अपराधों को भागते-दौड़ते व्यस्त जीवन में वह भूले रहता है परन्तु जब अन्तिम घड़ियाँ निकट आती हैं तो एक-एक काला कर्म, डरावना साया बन कर मन-बुद्धि पर मंडराने लगता है। महमूद गजनवी के साथ भी ऐसा ही हुआ। उसने सोमनाथ के सुप्रसिद्ध मन्दिर को 17 बार लूटा और ऊटों तथा गधों पर बहुमूल्य सामग्री लाद कर अपने देश ले गया।

समय परिवर्तनशील है। एक बार वह बीमार पड़ गया और मरने की स्थिति तक पहुँच गया। उसे बीते समय की घटनाएँ एक-एक कर याद आने लगी। उसने अचानक अपने मन्त्री से कहा - "उन हीरे-जवाहरात तथा धन-दौलत को मैं देखना चाहता हूँ जो भारत से लूट कर लाया गया है।" मन्त्री राजा को उस कमरे में ले गया जहाँ वह सब सामान रखा गया था। राजा फूट-फूट कर रोने लगा। मन्त्री ने कारण जानना चाहा। राजा ने कहा– "असंख्य लोगों को मौत के घाट उतार कर, उनका खून बहा कर जिन वस्तुओं को मैं लाया हूँ, आज अन्त समय में मेरा साथ नहीं दे रही हैं। मेरा नाम इतिहास में काले अक्षरों से लिखा जाएगा।" लेकिन अब हो भी क्या सकता था। सत्य ही है, पुण्य कर्मों की पूँजी के अलावा अन्त में कुछ भी आत्मा के साथ नहीं जाता। उपरोक्त घटना से हमें सीख लेनी चाहिए और पुण्य कमाने चाहिएँ। ✦✦✦

काम विकार – प्रकृति या विकृति

– अणुमाला

मानव परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना है। कहा जाता है कि परमात्मा ने मनुष्य को अपने जैसा बनाया (God made man as his own image)। सृष्टि के आदिकाल में मनुष्य देवता था, दैवी गुण और दिव्य शक्तियों से भरपूर था। इसलिए वहाँ प्रजोत्पत्ति के लिए योगबल का प्रयोग होता था। वहाँ एक या दो बच्चे ही होते थे जिससे सारे सन्तुलन बने रहते थे। समय प्रमाण हर चीज में परिवर्तन आता है और परिवर्तन हमेशा घटते क्रम की ओर होता है। इस घटते क्रम ने मानव को भी पावन से पतित और असाधारण से साधारण बना दिया। संस्कृति का भी नाश साथ में होता गया। इसे ही आध्यात्मिक भाषा में संसार में रावण की प्रवेशता, विकारों की शुरूआत या पतन की शुरूआत कहा जाता है। देवी-देवताओं की महिमा के साथ हम कहना नहीं भूलते "सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी ...."। उनमें काम विकार आधारित संबंध नहीं थे। कई लोग बिना सोचे-समझे कह देते हैं "काम तो परम्परा से चला आ रहा है, सृष्टि के आरम्भ से चला आ रहा है"। ऐसा कह कर वे निर्विकारी कहे जाने वाले देवी-देवताओं पर भी दोष लगाते हैं। परम्परा की दुहाई देने वालों ने देवताओं की अन्य परम्पराओं को क्यों नहीं निभाया? यह भी तो बहुत सटीक प्रश्न है। आज बच्चे काम विकार से होते हैं, आसक्ति से होते हैं, अनेक होते हैं इसलिए विकृति और असन्तुलन का चारों ओर बोलबाला है।

प्राचीन पुस्तकों में जन्म की कई प्रकार की विधियाँ वर्णित हैं जैसे कि मंत्रोच्चार द्वारा, दृष्टि द्वारा, वस्तु या फल आदि द्वारा। आधुनिक विज्ञान के पास भी ऐसे बहुत से तरीके हैं जिनमें प्रजोत्पत्ति के लिए काम विकार की जरूरत नहीं है, जैसेकि टेस्ट-ट्यूब बेबी, क्लोनिंग आदि। सुन कर हैरान होने की जरूरत नहीं है। अब तो कहा जाने लगा है कि बच्चे पैदा करने के लिए पुरुष की भी जरूरत नहीं है। हाल ही में चूहों पर एक सफल परीक्षण किया गया है, नवजात चूहों का पिता नहीं है। पवित्रता का प्रतीक माना जाने वाला राष्ट्रीय पक्षी मोर भी काम विकार के बिना वंश चलाता है। अनेक लोग सलाखों को मोड़ना, चलती घड़ी की सुइयों को रोकना आदि कार्य योगबल से करके दिखाते हैं तो ऐसे चमत्कारी योगबल से सन्तान पैदा होना असम्भव है क्या?

वर्तमान समय, लोग काम विकार के व्यसनी हो गए हैं, उसमें बुरी तरह से फँस गए हैं। जन्मों-जन्मों से इस संस्कार को भोगते-भोगते जैसे कि इसे प्राकृतिक मान लिया गया है। इतना प्राकृतिक लगता है यह जैसे कि तम्बाकू, सिगरेट पीने वालों को तम्बाकू और सिगरेट लगती है। आज के साधारण मनुष्य में योगबल की वह शक्ति नहीं है जिसका वर्णन हमने ऊपर किया है। इसलिए सन्तानोत्पत्ति के लिए इस पतित विधि को अपनाया गया है। परन्तु यही एक तरीका है, यह कहना सरासर गलत है। उर्ध्वरिता जिन्हें कहा जाता है, वे तो योगबल से ही अति तेजस्वी प्रजोत्पत्ति करते हैं। काम विकार का उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति हो तो भी एक हद तक ठीक है पर सभी अपने विवेक को

झंझोड़ कर बताएँ कि क्या आज इसका रूप, उद्देश्य से भटका हुआ और पतनकारी नहीं है? इस पैशाचिक वृत्ति ने बुद्धि को ऐसे जकड़ लिया, ऐसे जाल में फँसाया कि कामांधता में फँसा मानव अपने पूर्वजों का विचार करने की फुर्सत खो बैठा। अपने इष्टों की प्रवृत्ति क्या थी, यह सोचने के बजाय वह काम विकार के अनेक तरीकों को सोचने में लगा रहा।

लोग कहते हैं कि काम विकार शरीर की भूख मिटाने के लिए जरूरी है। ऐसे लोगों से मेरा निवेदन है कि तुम जिसे भूख कहते हो वह भूख नहीं है, रोग है, विकृति है। शरीर की भूख मिटती है कुछ खाने से (लेने से), जीवनशक्ति को खर्च करने से नहीं (देने से नहीं)। और फिर इससे तो शारीरिक कमजोरी (जड़ता), थकान आदि होती है, इससे जो सुख या आनन्द मिलता है वह ऐसे हुआ जैसे शराबी को पीने के बाद या जुआरी को सबकुछ खोने के बाद। क्या उसे आनन्द कहेंगे? यह कैसा आनन्द और कैसी मौज है? थोड़ी देर की खुशियों के लिए जिन्दगी भर का दु:ख उठा लेना - यह मौज या खुशी नहीं बल्कि अज्ञान है, बेवकूफी है।

शंकराचार्य ने काम विकार पर नियन्त्रण करने के लिए ब्रह्मचर्य को महत्त्व देते हुए संन्यास धर्म की स्थापना की। इसका प्रचार-प्रसार करके अनेक लोगों को काम विकार से दूर रहने की सलाह दी, अनेकों को बचाया। यहाँ तक कि लोगों को पवित्र रखने के लिए नारी पर भी दोष लगाए। "नारी नर्क का द्वार है" यह कह कर, उसकी आलोचना करके लोगों को इस पाप से घृणा दिलाने का प्रयास किया। ताकि इसी बहाने लोगों में पवित्रता बनी रहे। अनेक धर्म पुस्तकों, शास्त्रों को लिखा गया। कुछ नियम बनाए गए ताकि पतन की रफ्तार को कुछ हद तक रोका जा सके। जैसे 25 वर्ष तक बाल और तरुण अवस्था में काम विकार को निषेध माना गया। गृहस्थ आश्रम तक के 50 वर्ष पूरे होने के बाद वानप्रस्थ अवस्था में भी इसका निषेध किया गया। गृहस्थ आश्रम की 25 वर्ष की अवधि में छूट दी गई परन्तु उसे भी त्योहार, पूजा, पूर्णिमा, अमावस, उपवास आदि अनेक पवित्र दिनों पर प्रतिबन्धित किया गया। पवित्रता के महत्त्व और काम विकार के नुकसान से सभी ऋषि-मुनि वाकिफ थे। भारत में तो वर्ष के 365 दिनों में से मुश्किल से 2-4 दिन ही बिना त्योहार के होते हैं। साधु-संन्यासी भी अपनी पवित्रता के बल से, इस अग्नि से किसी सीमा तक समाज का बचाव कर सके।

पाश्चात्य देशों में इसके महत्त्व की अज्ञानता के कारण ही उनकी संस्कृति की हानि हुई है। लोगों में धर्म बल नहीं रहा है। भारत देश में अपने से छोटों तथा बड़ों के सामने अभद्र व्यवहार पर रोक थी ताकि मर्यादा और आदर्शों को बचाया जा सके। वे भी तब तक चले जब तक मीडिया के साधनों ने वार नहीं किया था। पिछले 100 वर्षों में जो कुछ हुआ वह तो किसी युग में भी नहीं हुआ, उससे सभी भिज्ञ हैं।

अत: आनन्द और विकृति के फर्क को महसूस करते हुए पवित्रता के महत्त्व को जान कर रामराज्य की स्थापना में पिता परमात्मा के मददगार बनें और पवित्रता की दृढ़ प्रतिज्ञा कर अतीन्द्रिय आनन्द के दुर्लभ परम सौभाग्य का वरण करें। याद रखें, भगवान की पवित्र बनने की यह अपील अभी ही है, विकारों का दान भी वे अभी ही ले रहे हैं। **दे दान तो छूटे ग्रहण। अभी नहीं तो फिर कभी नहीं।**

मैं कौन ?

– ब्रह्माकुमार सुभाष अरोरा, भिलाई

आज से 4 वर्ष पूर्व जब मैं स्थानीय राजयोग केन्द्र पर पहुँचा तो बाहर खड़ी श्वेत वस्त्रधारी एक बहन ने पूछा –

"आप कौन हैं ?"

"जी, मैं सुभाष अरोरा हूँ।"

"आपका नाम पता चल गया लेकिन आप कौन हैं ?" बहन ने फिर पूछा।

"जी, मैं एक इंजीनियर हूँ और भिलाई इस्पात संयंत्र में सहायक महा–प्रबन्धक हूँ।"

"आपका व्यवसाय और आपका पद भी जान लिया लेकिन मेरा प्रश्न है कि आप कौन हैं ?"

"जी, मैं एक हिन्दू हूँ।"

"अच्छा आपका धर्म भी पता चल गया लेकिन आपने अभी तक मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया कि आप कौन हैं ?" "जी, मैं एक भारतीय हूँ ?"

"आपकी नागरिकता का भी पता चल गया लेकिन मैं तो आप कौन हैं, यह पूछ रही हूँ" – बहन ने पुन: कहा।

ये बातें करते–करते हम सेवाकेन्द्र के आगन्तुक–कक्षमें आ गए। मन में विचार बड़ी तेजी से दौड़ने लगे कि अभी तक अपने बारे में जो कुछ मैं जानता था; वह सब मैंने बता दिया। विद्यालय, महाविद्यालय और नौकरी के दौरान जो भी फॉर्म (form) मैं भरता था उनमें यही जानकारी देने से मेरा परिचय पूरा हो जाता था लेकिन यह बहन पता नहीं कौन–सी बात जानना चाहती है ? मुझे चुप और असमंजस में देख उसने स्वयं कहा –"भाई, आपने गलत कुछ भी नहीं कहा है परन्तु आपने बताया आपका नाम, आपका व्यवसाय और पद, आपका धर्म, आपकी नागरिकता।" मैंने कहा – "जी।" "ये सब आपके हैं तो फिर आप कौन हैं ?"

मैं निरुत्तर था कि क्या सचमुच मैं स्वयं, स्वयं को नहीं जानता ? जो मैं जानता हूँ, मैं वह नहीं, कुछ और हूँ? मुझे गहन चुप्पी में देख बहन ने कहा – "आप शरीर से भिन्न ज्योतिर्बिन्दु आत्मा हैं। प्रकाशमय सितारे जैसा आपका रूप है, आप अजर, अमर हैं, परमात्मा शिव की सन्तान हैं, शान्तिधाम आपका घर है और इस सृष्टि मंच पर आप पार्ट बजाने आए हैं।" यह परिचय मेरी अपनी जानकारी से पूर्णतया विपरीत था। सात दिन के कोर्स के दौरान यह बात बार-बार दोहराई गई कि आप आत्मा के स्वरूप में स्थित होइये। अपना यह वास्तविक परिचय पाकर अच्छा भी लगने लगा, स्वभाव में भी बदलाव आने लगा। मुझे बार-बार स्मृति में आने लगा कि मेरा स्वधर्म शान्ति है, मेरा स्वधाम शान्तिधाम है और मेरा परमपिता परमात्मा शान्ति का सागर है। लेकिन फिर भी दिल के गुप्त कोने में इसे स्वीकार करने के प्रति संशय या दुविधा सदा बनी रहती थी।

चार मास बाद मुझे अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय आबू पर्वत पर एक इंजीनियर्स सम्मेलन में भाग लेने के लिए भेजा गया। वापसी पर जब मैं गाड़ी में बैठा-बैठा ज्ञान की बातों पर मनन कर रहा था तो अचानक मेरे जीवन की फिल्म पीछे घूमने लगी और एक विशेष दिन पर आकर रुक गई। उस दिन मेरी पत्नी का देहान्त हुआ था, उन्हें कैन्सर था। दोपहर का समय था, उन्हें बार-बार उल्टी हो रही थी, दवाई से थोड़ी देर आराम आता था पर फिर उल्टी होने लगती थी। सांयकाल साढ़े सात बजे उल्टी बन्द हो गई। तब मैंने उन्हें फलों का रस पीने को दिया। इसके बाद मैं और मेरा बेटा उनको सहारा देकर ड्राइंग रूम में सोफे के पास ले आए लेकिन जैसे ही बिठाने लगे तो उनके मुख से अन्तिम दो शब्द निकले – "मैं गई" और उन्होंने प्राण त्याग दिए। यह सारा दृश्य ट्रेन में ही मेरे सामने घूम रहा था, मैंने स्वयं से ही प्रश्न किया – किसने कहा "मैं गई" ? क्या उस शरीर ने जिसका नाम वीना था और जो मेरी पत्नी थी ? लेकिन वह तो उस समय मेरे सामने सोफे पर पड़ी हुई थी, तो फिर किसने कहा "मैं गई", "कौन गई" ? साधारण से लगने वाले इन दो शब्दों ने एक छिपा हुआ गुह्य रहस्य मेरे सामने स्पष्ट कर दिया। मुझे 100% विश्वास हो गया कि इस शरीर को चलाने वाली चेतन आत्मा इस शरीर से भिन्न है। कपड़े को छोड़ने की तरह ही आत्मा इस शरीर को छोड़ देती है, इससे न्यारी हो जाती है। अब कोई संशय नहीं है। ***

कीजिये योग, मिटे हृदय रोग

– ब्रह्माकुमार संजय हरिनारायण सारडा, मंगरूळपीर (वाशिम)

आज हृदयरोग से समूचा विश्व परेशान हो रहा है। विदेशों की तुलना में भारतवर्ष में हृदयरोग का फैलाव जोरों से होता जा रहा है। आज हमारे पास बहुत-सी उपलब्धियाँ हैं। हमने तीव्र गति की जीवनधारा को स्वीकार कर लिया है। इसके फलस्वरूप तनाव (Tension) की प्राप्ति हुई है। हमारा बचपन कहीं खो गया है। पढ़ाई, व्यवसाय, नौकरी आदि की प्रतिस्पर्धा का तनाव, ज्यादा सुख-सुविधा जुटाने हेतु ज्यादा पैसा कमाने का तनाव, मनचाही बातें पूरी न होने का तनाव – इन सबके कारण परम्परागत स्वाभाविक जीवन पद्धति कहीं खो गई है।

गलत खान-पान, व्यसनों की अधीनता, ज्यादा चिकनाई वाला आहार, आधुनिक उपकरणों की वजह से आरामदायी जीवन और व्यायाम का अभाव, दूरदर्शन संस्कृति की वजह से आपसी व्यवहार में आई दूरियाँ, बढ़ती भोग-विलासिता तथा मूल्य आधारित जीवन पद्धति न होने के परिणाम हैं हृदयरोग, उच्च रक्तचाप, मधुमेह तथा कैंसर। अन्य बीमारियों को रोगी खुद ही भुगतता है लेकिन हृदयाघात होने पर रोगी के साथ-साथ पूरा परिवार तनावग्रस्त रहता है। अब हृदयरोग के लिए उम्र का तकाजा नहीं है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि यह जानलेवा बीमारी युवावर्ग में तेजी से फैलती जा रही है।

हृदयरोग होने के उपरान्त कोरोनरी आर्टरीज में अवरोध समझने के लिए एन्जियोग्राफी करवानी पड़ती है जिसका खर्च रू. 15000/- के करीब होता है। आर्टरी में कम अवरोध हो तो एन्जियोप्लास्टी करवानी पड़ती है जिसका खर्च करीब 1.0 से 1.5 लाख तक आता है। आर्टरी में ज्यादा ब्लॉकेज हो तो बायपास सर्जरी करवानी पड़ती है जिसका खर्च करीब 2.0 से 3.0 लाख तक होता है। बायपास सर्जरी के बाद रोगी इस रोग से मुक्त नहीं होता है, उसे उम्र भर दवा खानी पड़ती है।

इस रोग के लिए ऑपरेशन के अलावा दूसरा इलाज लोगों की जानकारी में नहीं है परन्तु अब राजयोगी जीवनशैली को अपना कर बिना ऑपरेशन के ही हृदय की कोरोनरी आर्टरीज़ के अवरोधों को कम या पूर्णत: नष्ट किया जा सकता है जिस पर खर्च भी कुछ नहीं है। मुझे 34 वर्ष की आयु में ही हृदय विकार का शिकार होना पड़ा। एन्जियोग्राफी के उपरान्त चार कोरोनरी आर्टरीज़ में अवरोध पाये गये। मुम्बई में मेरी बायपास सर्जरी हुई जिस पर रु. 2.0 लाख का खर्च हुआ। ऑपरेशन के उपरान्त भी चलने में मुझे हृदय की पीड़ा (चेस्ट पेन) होती थी। रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा ज्यादा ही रहती थी जिसे कम करने हेतु ज्यादा दवा खानी पड़ती थी।

बार-बार स्वास्थ्य की जाँच के लिए मुम्बई जाना पड़ता था। कोई भी व्यसन न होते हुए भी इस खतरनाक बीमारी का मैं शिकार क्यों हुआ, यह विचार मुझे सदैव परेशान करता था। स्थानीय ब्रह्माकुमारी राजयोग केन्द्र पर जाने से कुछ परेशानी कम हुई। वहाँ की बहनों की सलाह पर माउण्ट आबू में ग्लोबल हॉस्पिटल व रिसर्च सेंटर द्वारा आयोजित राजयोगी जीवनशैली के आधार पर हृदयरोग मुक्ति शिविर में शामिल हुआ। शिविर के मात्र सात दिनों में ही मेरे जीवन तथा स्वास्थ्य में जबरदस्त सुधार हुआ। राजयोग ध्यान पद्धति, सात्विक तथा कम वसायुक्त (चिकनाई) भोजन तथा एरोबिक व्यायाम से मेरा कोलेस्ट्रॉल न्यूनतम लेवल पर आ गया। हृदय की पंपिंग में बढ़ोतरी हुई तथा राजयोगी जीवन पद्धति अपनाने से 6-7 कि.मी. तेजी से चलने पर भी

सीने में दर्द नहीं हुआ। इससे निराशा दूर हुई और मुझे आत्मबल प्राप्त हुआ है।

दिल्ली के एस्कार्ट हॉस्पिटल के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सतीश गुप्ता जी ने अपनी अच्छी खासी प्रैक्टिस छोड़ कर हृदयरोगियों की नि:स्वार्थ सेवा के लिए ब्रह्माकुमारी ग्लोबल हॉस्पिटल में सेवा देना प्रारम्भ किया है। शिविर में डॉ. गुप्ता जी बताते हैं कि स्वस्थ का अर्थ है स्व + स्थ अर्थात् स्व माना आत्मा और स्थ माना स्थित होना, आत्मिक स्थिति में स्थित होना। जो व्यक्ति आत्मिक स्थिति में रहने का सदा अभ्यास करता है वो सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति पा सकता है। राजयोग से हर व्यक्ति सुख, शान्ति, आनन्द की अनुभूति प्राप्त कर सकता है। राजयोगी जीवन पद्धति अपनाने वाले सभी हृदयरोगी, अपनी बीमारी से लगभग मुक्त हो जाते हैं। बायपास सर्जरी का सुझाव दिये गए रोगियों ने भी राजयोगी जीवन पद्धति अपनाने के बाद दुबारा एन्जियोग्राफी करवाई तो उनकी कोरोनरी आर्टरीज़ में अवरोध नष्ट होते देखे गए हैं। सभी रोगियों के हार्ट पंपिंग में सुधार पाया गया है। रक्त में बुरा कोलेस्ट्रॉल कम हुआ है तथा अच्छा कोलेस्ट्रॉल बढ़ा है। तनाव तथा मधुमेह भी नियन्त्रण में आ जाते हैं। दवा खाने की मात्रा बहुत ही कम हो जाती है। दवा के खर्च में बहुत ही बचत हो जाती है।

जो हृदयरोगी राजयोगी जीवन पद्धति द्वारा उपचार कराने हेतु इस शिविर में भाग लेना चाहते हैं वे अपनी एन्जियोग्राफी रिपोर्ट की फोटो कॉपी स्थानीय ब्रह्माकुमारी राजयोग केन्द्र द्वारा डॉ. सतीश गुप्ता, केड (CAD) प्रोजेक्ट, शान्तिवन, आबू रोड, जि. सिरोही, राजस्थान - इस पते पर भेजें। भ्राता गुप्ता जी द्वारा शिविर का प्रवेश-पत्र पाकर शिविर में उपस्थित हो जायें और राजयोगी जीवन पद्धति द्वारा हृदयरोग से मुक्ति पाएँ।

★★★

दोषी कौन?

– ब्रह्माकुमार नरेन्द्र पटेल, अलकापुरी, बड़ौदा

कलियुग में अधिकतर व्यक्तियों की यह तमोगुणी वृत्ति रहती है कि उनके जीवन में यदि अनिष्ट घटित हो जाए तो वे सदैव दूसरों को ही दोषी ठहराते हैं। उनकी उंगली दूसरों की तरफ ही इशारा करती रहती है कि अमुक ने ऐसा किया तो यह बुरा हुआ। इस सम्बन्ध में बादशाह अकबर की बात सुनाते हैं कि एक बार वे सैर करने निकले और थोड़ा आगे जाते ही फिसल पड़े। उन्हें चोट लगी। जब वे सैर करके वापस लौट रहे थे तो उन पर पेड़ की एक डाली टूट कर गिरी। इससे उनके सिर पर चोट लगी। बादशाह को खूब गुस्सा आया। तभी उन्हें याद आया कि सवेरे उठते ही उन्होंने सेवक गुलाम का चेहरा देखा था। उन्होंने सोचा कि जरूर उसका मुख ही सारे अनिष्टों की जड़ है, उन्होंने उसे फाँसी की सजा सुना दी। बीरबल ने फाँसी पर जाते गुलाम को कुछ समझाया। जब गुलाम से उसकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो उसने कहा - "महाराज, मेरा चेहरा देखने से तो इतना ही हुआ कि आप फिसल गए पर आपका चेहरा देखने से मुझे तो फाँसी की सजा मिल गई। अब आप ही विचारिए कि कौन किसके लिए अनिष्टकारी बना?" बादशाह का गुस्सा एकदम शान्त हो गया, उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ और गुलाम बरी हो गया।

कहानी सत्य है या असत्य इस बहस को छोड़ कर हमें यह विचार करना है कि क्या किसी का चेहरा देखने मात्र से ही किसी के पाप-पुण्य, दु:ख-सुख निर्मित हो जाते हैं? कदापि नहीं। सच तो यह है कि हमें आज जो कुछ मिल रहा है उसके पीछे बीते कल में हमारे द्वारा बोए गए बीज ही कारण हैं। कर्म-फल से राजा, रंक, फकीर कोई नहीं बच सकता। इसलिए दूसरों पर दोषारोपण करने के बजाए हमें अन्तर्मुखी हो स्वयं की जाँच करनी चाहिए, स्वयं का परिवर्तन करना चाहिए और स्वयं के कर्मों को श्रेष्ठ बनाना चाहिए ताकि कोई अनिष्ट घटे ही नहीं। कर्म श्रेष्ठ बनते हैं परमपिता परमात्मा शिव की पावन स्मृति में एकाग्र होने से। ★★★

हर बात में कल्याण है

– ब्रह्माकुमार हरीश, कुसुम्बा (महा.)

हर मानव, जीवन में सदा खुशी, सन्तुष्टि, सफलता और भरपूरता चाहता है परन्तु कभी-कभी ऐसी घटनाएँ घट जाती हैं कि उपरोक्त में से कोई भी चीज प्रत्यक्ष रूप में उसके हाथ नहीं लगती और वह अन्दर से छटपटा उठता है। कई बार वह ऐसी घटना के लिए व्यक्ति, समय, स्थान आदि को दोषी मानता है और कई बार भगवान को भी दोषी मानने की भूल कर बैठता है परन्तु जिस घटना से प्रत्यक्ष रूप में सिर्फ हताशा, निराशा, घबराहट और छटपटाहट मिलती है, उसी घटना के गर्भ में हमारे लिए सुखद, मंगलमय सन्देश छिपा रहता है, इस बात को मानव भूल जाता है। जब पर्दा उठता है तो कल्याण के आगोश में स्वयं को पाकर उसका मुँह आश्चर्य मिश्रित आनन्द से खुला का खुला हर जाता है। अत: **'हर बात में कल्याण है' इस मन्त्र को जीवन में हर पल साथ रखो और आवरण के अन्दर छिपे अपने प्रति शुभ सन्देश को तीसरे नेत्र से निहारते हुए निश्चिंत होकर जीवन-यात्रा में आगे बढ़ो।**

एक सत्य घटना से उपरोक्त बात को प्रमाणित करना चाहूँगा। नियमित दिनचर्या के अनुसार एक शाम को जब मैं सेवाकेन्द्र पर राजयोग के अभ्यास के लिए पहुँचा तो मुझे आदेश मिला कि जल्दी से पास के गाँव में, जहाँ ईश्वरीय सेवा चल रही है, जाइये और निमित्त बहन को ले आइये, मधुबन से जरूरी सेवा का सन्देश आया है। मैं तुरन्त सेवाकेन्द्र से निकला, सांयकाल के सात बज रहे थे। मुझे वापस भी लौटना था क्योंकि अगले दिन महाविद्यालय में मेरी परीक्षा थी। मैंने एक दोस्त को साथ ले लिया और हम दोनों सड़क पर खड़े हो गए ताकि जो भी साधन आए उसी पर सवार होकर गन्तव्य तक पहुँच सकें। इतने में एक ट्रक आया, हमने रुकने के लिए संकेत दिया। ट्रक चालक ने गति कम कर ली, हम उसकी ओर दौड़े तो उसने गति बढ़ा ली। थोड़ा आगे जाकर फिर गति कम कर ली, उसके पीछे हम फिर भागे परन्तु उसने पुन: गति तीव्र कर ली। इस प्रकार, दो-तीन बार उसने कम-अधिक गति की जिससे हम काफी थक गए। अंतत: ट्रक तेज गति से चला गया। चालक के इस प्रकार के व्यवहार से मेरा दोस्त काफी क्रोधित हुआ, उसने उस चालक के प्रति अनुचित शब्दों का प्रयोग भी किया। मैंने समझा कर उसे शांत करने की कोशिश की। मैंने उसे बताया कि इसमें भी हमारा कुछ कल्याण होगा लेकिन उसका गुस्सा शान्त नहीं हो रहा था। इतने में बस आई और हम उसमें चढ़ गए। मित्र के बोल अभी भी क्रोधाग्नि से भरे हुए थे, मेरा उसे समझाने का कार्य जारी था, तभी कंडक्टर आया, मैंने उसे पैसे दिए और वह टिकट काट ही रहा था कि बस को झटके से रोका गया। गाड़ी रुकते ही बस में बैठे सब लोग जल्दी-जल्दी नीचे उतरने लगे। हम भी नीचे उतरे तो देखा कि काफी भीड़ इकट्ठी हुई थी, लोगों के चेहरे घबराए हुए नज़र आ रहे थे। जहाँ भीड़ थी वहाँ जाकर देखा तो पाया कि दो शव पड़े थे, उनके चारों और काफी खून बिखरा हुआ था, शरीर से अलग होकर माँस के छोटे-छोटे टुकड़े भी बिखरे हुए थे। बड़ा भयानक दृश्य था। सामने वही ट्रक जिसके पीछे हम भागे थे, पेड़ से टकराया हुआ था। मैंने दोस्त को दिखाया कि यह वही ट्रक है जिस पर हम सवार होना चाहते थे। लोग आपस में चर्चा कर रहे थे कि काफी शराब पिया हुआ था चालक इसलिए यह दुर्घटना घटी। यह दृश्य देख मित्र का क्रोध तो गायब हो ही गया था, साथ ही उसे निश्चय हो गया कि **'हर बात में कल्याण है'** हम दोनों ने प्यारे बापदादा को दिल से धन्यवाद दिया और सभी के साथ बस में चढ़ कर आगे की ओर चल पड़े।

थोड़ी दवा भी, थोड़ी दुआ भी

– ब्रह्माकुमार पीयूष, दिल्ली

आधुनिक युग में आयुर्विज्ञान के प्रयोग सचमुच चौंकाने वाले हैं। आज तो हर दिन एक-से-एक नई औषधि खोजी जा रही है तथा नित नये स्वास्थ्य केन्द्र खुलते जा रहे हैं। पाँच सितारा अस्पतालों की दिनोंदिन बढ़ती संख्या से तो ऐसा आभास होता है मानो भारतवासियों से बीमारियाँ अभी कोसों दूर भागने वाली हैं, अब तो प्रत्येक भारतीय भला-चंगा हो ही जायेगा। लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू आश्चर्यचकित करने वाला है। जैसे-जैसे औषधालयों की संख्या बढ़ रही है,वैसे-वैसे रोगों में भी अभिवृद्धि होती जा रही है। यह स्थिति तो पुरानी कहावत – "मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की" को ही चरितार्थ कर रही है। मोटे अनुमान के अनुसार आज प्रत्येक व्यक्ति रोगी है – कोई तन का रोगी तो कोई मन का रोगी, कोई संबंधों का रोगी तो कोई धन का रोगी। तन बीमार हो जाय तो उसके लिए तो डॉक्टर उपलब्ध हैं लेकिन मन यदि रोगग्रस्त हो जाये अथवा संबंधों में कटुता आ जाय, तो कौन से चिकित्सक से परामर्श किया जाय, यह प्रश्न आज भी अधिकतर नागरिकों के लिए अनुत्तरित ही है। विचारणीय है कि आयुर्विज्ञान में इतनी उन्नति होने के उपरांत भी रोगों पर नियन्त्रण क्यों नहीं हो पा रहा है ? क्योंकि समस्या के मूल में जाने का प्रयास यथार्थ तरीके से नहीं हो रहा है। आयुर्विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि रोग मानव के मन में ही उत्पन्न होते हैं। इसलिए शरीर के साथ-साथ मन को स्वस्थ रखने की भी ज़रूरत है। यदि मानव मन, दुरुस्त और शक्तिशाली हो तो बहुत सारी बीमारियाँ उत्पन्न ही नहीं होंगी। जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सन्तुलित भोजन की आवश्यकता होती है, ठीक वैसे ही, मन को ठीक रखने के लिए श्रेष्ठ विचारों की आवश्यकता होती है। मनोबल ऊँचा हो तो रोग दूर रहते हैं।

सुस्वास्थ्य के कुछ नुस्खे

1. आत्म-चिन्तन और प्रभु चिन्तन करें – प्रात:काल उठ कर स्वयं के विषय में सोचना एवं स्वयं से बात करना अत्यन्त आवश्यक है। साथ ही कुछ समय के लिए प्रभु से ध्यान लगाने से मन में नई ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है। आत्मा, शक्ति सम्पन्न हो जाती है। सवेरे की शक्ति सारे दिन कार्य करती है तथा कार्यक्षमता कई गुणा बढ़ जाती है।

2. सकारात्मक चिन्तन करें – सकारात्मक चिन्तन आत्मा के लिए सर्वाधिक पौष्टिक भोजन है। जब भी समय मिले कुछ क्षण निकाल कर शुद्ध और पवित्र संकल्प करें। यदि सम्भव हो तो प्रत्येक घंटे भी यह अभ्यास किया जा सकता है। संकल्प जितने कम होंगे उनकी गुणवत्ता उतनी ही अधिक होगी। सकारात्मक संकल्प आत्मा की शक्ति क्षीण होने से बचाते हैं, फलस्वरूप तन और मन दोनों ही सुख अनुभव करते हैं।

3. सभी की दुआएँ लें और सभी को दुआएँ दें – जहाँ दवा काम न करे वहाँ दुआ काम करती है। दूसरों की सच्चे दिल से सेवा करना, किसी की भावनाओं को आहत न करना और परमार्थ के कार्य में सदा लगे रहने से सभी की दुआएँ स्वत: ही मिलती हैं। यह अनुभव सम्मत है कि जिसके पास दुआओं का खजाना जमा हो वह सबसे धनी तथा स्वस्थ व्यक्ति होगा।

दुआएँ देने के लिए स्वयं को दाता समझें। दूसरों के प्रति जब हमारी रहम की भावना होती है तो हम अपकारी पर भी उपकार ही करते हैं। यदि किसी ने मुझ पर क्रोध भी किया हो तो भी मुझे उसे शान्ति के प्रकम्पन ही देने हैं। किसी ने मेरे लिए भला-बुरा कहा हो तो भी मुझे उसके लिए शुभ भावना रखनी है और किसी ने मेरी निन्दा की हो तो भी मुझे उसके प्रति कल्याण की भावना रखनी है। ऐसा दृष्टिकोण रखने से हमारा स्वयं का स्वास्थ्य तो अच्छा रहता ही है हम अपने आस-पास के वातावरण को भी शुद्ध और पवित्र बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

तो आइये ! हम आज से ही सभी के प्रति शुभ भावना रखें, सभी को अपना भाई समझें, सभी के साथ मित्रवत् व्यवहार करें। ऐसा करने से हमें सभी की दुआएँ प्राप्त होती रहेंगी। परिणामस्वरूप मन सदैव प्रफुल्लित रहेगा। स्फूर्त मन में ही निरोगी तन की कुँजी समाई होती है।

दिव्यानुभूति

– भागवत प्रसाद पाण्डेय, प्रधानाचार्य, गोंड़खाम्ही (छत्तीसगढ़)

दिनांक 3 मई की रात को हम शान्तिवन पहुँचे, स्नेहिल स्वागत के पश्चात् निर्धारित आवास में, अनेक प्रश्नों, जिज्ञासाओं, दुराग्रहों और पूर्वाग्रहों की चादर ओढ़ कर सो गए। प्रात: मंद बयार के साथ पक्षियों की मधुर ध्वनि के मध्य अधखुले नेत्रों से उठे और नित्यक्रिया से निवृत्त हो ध्यान-केन्द्र पहुँचे। वहाँ का शान्त सुरम्य परिवेश मुझे लौकिक मनोदशा से कहीं और खींच रहा था, ''न ययौ न तस्यौ'' की स्थिति में लहरों पर तैरते राजहंस की भाँति ''तरत: तरंगेष्विव राजहंस:'' मन चंचल होकर भी स्थिर था। ॐ शान्ति की सुमधुर अमृत-ध्वनि के साथ मन भी शान्त हो गया। भव्य मंच पर विराजित तप:पूता श्वेतवसना बहन की आध्यात्मिक वाणी का श्रवण कर पूर्वाग्रहों के पीत-पात झर रहे थे और देह-विटप एक भव्य-दिव्य अलौकिक हल्केपन से युक्त था। शान्तिवन की अहर्निश शान्त सक्रियता और विज्ञान का अध्यात्म से सामन्जस्य, मानो नई सम्पूर्ण सृष्टि का संकेत दे रहा था। फल-पुष्प के भार से विनत वृक्ष प्रशस्त मार्गों के किनारे खड़े, आगतों का स्वागत कर रहे थे। सांय उद्घाटन सत्र में आयोजकों के भावपगे, अपनापन लिए शब्द-सुमन बहुमूल्य हारों से भी मूल्यवान लग रहे थे। सत्रों की शृंखला चलती रही और मैं नष्टोमोह: की दशा की अनुभूति करता रहा।

आबू-दर्शन के दौरान संस्था की विस्तृत स्थापना, भव्यता, दिव्यता और अलौकिकता की अनुभूति हुई, वर्णनातीत, शब्दातीत ''गिरा अनयन, नयन बिनु बानी।'' एक अद्‌भुत, अकल्पनीय सृष्टि, जहाँ शारदा की विद्वता, गणेश की बुद्धिमता, गंगा की पवित्रता, शंकर की शान्ति, हनुमान का सेवाव्रत, कृष्ण की मधुरता और राम की मर्यादा, परमात्मा शिव की अध्यक्षता में प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सुस्थापित किए जा रहे हैं। जहाँ गंध रस में, रस तेज में, तेज स्पर्श में और स्पर्श ध्वनि में, ॐ शान्ति बन असंख्य अनुगूँजों में व्याप्त हो रही थी। परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा 'मन्मनाभव' का संदेश देते आश्वस्त कर रहे थे –

''अनन्यश्चिन्तयन्तो मां यो जना: पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।''

इस नई सृष्टि में तापत्रय से मुक्त होकर सच्चिदानंद स्वरूप परमपिता परमात्मा से मिलन का आमंत्रण है। यह संस्थान सतयुग की आधारशिला है। यहाँ के दिव्य लोक में मन-बुद्धि एकाकार हो, तन्मय हो, परमपिता शिव के दिव्य ज्योतिर्मय रूप से परम सान्निध्य की अनुभूति करते हैं। आत्मा, परमात्मा से दिव्य मिलन की आनन्दानुभूति करती है। आश्रम का सुसंचालन नारी-शक्ति का प्रकट रूप है। यहाँ त्याग-तपस्या, विद्वता के साथ गोपाङ्गनाओं का महाभाव तथा आनंदानुभूति से आह्लादित बहनों की दृष्टि ही राजयोग के पथिकों को दुलारती है। सतयुग का संदेश देती इन बहनों के प्रति मेरी भाव-कुसुमांजलि सादर समर्पित है –

''जिनका तन-मन तप से पावन,
जो सतयुग का करती सर्जन।
उन राजयोगिनी बहनों का मैं करता
हूँ शत-शत वन्दन।।
जिनमें मीरा-सी तन्मयता,
जिनमें गोपी-सा महाभाव।
जो परमपिता शिव की प्यारी,
सच्चिदानंद जिनका स्वभाव।।
जो नवयुग की वाहिका बनी,
उस नारी शक्ति का अभिनंदन।
उन राजयोगिनी बहनों का मैं करता
हूँ शत-शत वन्दन।।

राजयोग शिविर से पाथेय ले हम (युगल) अध्यात्म पथ पर चल रहे हैं, परमात्मा शिव हमारे योगक्षेम का वहन करेंगे, हम आश्वस्त भाव से दिव्य आनन्द का अनुभव कर रहे हैं।

चालक बनाम योगी

– ब्रह्माकुमार भास्कर, सूरत (मजुरागेट)

योगी का जीवन तथा एक वाहन-चालक का जीवन कई बातों में समान है। योगी जीवन में हर कर्म विधिपूर्वक करते हैं तो सिद्धि प्राप्त होती है। ऐसे ही गाड़ी का परिचालन भी विधिपूर्वक हो तो मंजिल मिलती है। वाहन के एक-एक पुर्जे के कार्य की तुलना मानव के अंगों से की जा सकती है। जब गाड़ी का हॉर्न बिना जरूरत के बजाते हैं तो बैटरी की शक्ति व्यर्थ खर्च होती है, इसी प्रकार, जहाँ-तहाँ गैर जरूरी बातें करने से शारीरिक शक्ति के साथ आत्मिक शक्ति भी कम होती है।

गाड़ी के हर यन्त्र का आवश्यकता अनुसार प्रयोग करने से यात्रा का आनन्द आता है, जैसे कि ब्रेक लगाना, गति कम करना, मोड़ देना, गति बढ़ाना आदि-आदि। अगर चालक का निर्णय उचित न हो तो भारी नुकसान हो सकता है, दुर्घटना घट सकती है। जीवन-यात्रा में भी अनेक प्रकार की समस्याएँ आती हैं, उस दौरान यदि निर्णय समाधानकारी हो तो खुशी मिलती है। जिस सेवा की जब आवश्यकता हो उसे हम कर लें तो खुशी होती है। समय बीत जाने पर वही सेवा करेंगे तो महत्त्व कम हो जाएगा। सेवा-क्षेत्र में ज्यादातर संयम और धैर्य की आवश्यकता रहती है। अगर हम जल्दबाजी करते हैं तो परिणाम बिगड़ जाता है। फिर मन में हताशा आ जाती है और जीवन रूपी गाड़ी को धक्का देकर चलाना पड़ता है।

कभी लम्बे सफर में जाना हो तो वाहन की सब प्रकार से जाँच की जाती है कि ब्रेक, लाइट, तेल, पानी आदि सही मात्रा में हैं? पुर्जे कहीं ढीले तो नहीं हैं? पहिए में हवा ठीक है? साथ-साथ यह भी सोच लेते हैं कि किस रास्ते से जाना है, कितना समय लगेगा और कहाँ रुकना है? इसी प्रकार, इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है श्री लक्ष्मी-श्री नारायण जैसा बनना। उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ज्ञान रूपी इंधन तथा ड्रामा की ढाल रूपी ब्रेक हो। ड्रामा तभी कहेंगे जब पुरुषार्थ पूरा हो जाता है। जैसे यातायात के नियमों के विरुद्ध यदि हम गाड़ी चलाते हैं तो मन में भय बना रहता है, इसी प्रकार, जीवन-यात्रा के भी निर्धारित नियम और मर्यादाएँ हैं। उनका अल्लंघन करने पर मानव का मन भयाक्रान्त रहता है। उसे इहलौकिक अपयश का और परलोक में धर्मराज की सजाओं का भय बना रहता है। योगी जीवन की किसी भी मर्यादा का उल्लंघन करने से अवस्था गिरती कला की ओर जाने लगती है। कई बार सड़क पर वाहनों की भीड़ लग जाती है। उस समय चालक की बुद्धि में सिर्फ यही रहता है कि गाड़ी को किसी तरह इस भीड़ में से निकालें और गन्तव्य तक जल्दी पहुँचें। वह यह नहीं सोचता कि यह वाहन कहाँ से आया? उस ट्रक में क्या भरा है? यह कौन-से स्थान पर जाने वाला है? इसी प्रकार, योगी जीवन में भी अनेक बातें, अनेक परिस्थितियाँ, अनेक लोग दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे आते रहते हैं। सच्चा योगी उनको देख कर टीका करने के झंझट में नहीं पड़ता। वह यही सोचता है कि कैसे इनके साथ रहते हुए भी मैं निर्लिप्त रह कर जीवन-यात्रा को सफलता की ओर ले चलूँ। साक्षी होकर, भगवान को साथी बना कर, कमल समान न्यारा होकर अपने लक्ष्य को जल्दी प्राप्त कर लूँ।

सफर में अनेक प्रकार के दृश्य आते हैं, शहर, गाँव, पहाड़ी, जंगल, नदी, हरियाली और कभी सूखा प्रदेश। कभी रास्ता अच्छा होता है, कभी कच्चे रास्ते से भी गुजरना पड़ता है परन्तु मंजिल पर पहुँचने का लक्ष्य होता है तो इन सभी दृश्यों को पार करके आगे बढ़ते रहते हैं न कि हरियाली या नदी को देख कर वहाँ ही रुक जाते हैं। वैसे ही योगी जीवन में भी कई प्रकार के रंग-बिरंगे दृश्य आते हैं, आकर्षित भी करते हैं। उस समय ज्ञान की शक्ति चाहिए। किसके साथ कितनी और कैसी बातें करनी

हैं? कहाँ चुप रहना है? कहाँ चलना है, कहाँ रुकना है, इन सब बातों का ध्यान हो तो जीवन में संघर्ष नहीं रहता है। हमारी सोच ही हमारे जीवन के चढ़ाव-उतार के निमित्त बनती है।

अचानक गतिरोधक आ जाने पर वाहन की गति धीमी करनी पड़ती है। यदि ऐसा न करें तो गाड़ी का कोई भी पुर्जा टूटने की सम्भावना रहती है अथवा अन्य प्रकार का नुकसान हो सकता है। अगर कोई गाड़ी में बैठे हैं तो उनको भी चोट आदि की तकलीफ हो सकती है। यह विकर्म का खाता बन जाता है। इसी प्रकार, जीवन में भी स्वभाव-संस्कार, पुरानी स्मृतियाँ, मन की कमजोरी आदि के रूप में अनेक गतिरोधक आते हैं। उस समय पुरुषार्थ की गति धीमी हो जाती है। उस बाधा को शान्ति से पार करके पुरुषार्थ को पुन: बढ़ा लें। परन्तु यदि उस दौरान हमारे स्वभाव-संस्कार की नकारात्मक प्रबलता प्रकट हो गई और अन्य पुरुषार्थियों को भी हमने पुरुषार्थ के मार्ग से थोड़ा हिला दिया या उनका समय लगवाया, संकल्प लगवाए तो यह अलग से कर्म-खाता बन जाएगा। इसलिए ध्यान रहे कि मेरे कारण अन्य का कुछ भी नुकसान न हो। किसी का समय, संकल्प, धन मुझ पर लगने के बजाए विश्व कल्याण में लगे।

✤✤✤

राजयोगिनी दादी जानकी जी का अनोखा प्रभामण्डल

सेंट पिटर्सबर्ग शहर के जन्मोत्सव पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित "शान्ति महोत्सव - शहर के लिए आनन्दोत्सव" का उद्घाटन 24 मई, 2004 को राजयोगिनी दादी जानकी जी के कर कमलों द्वारा एवं पिटर्सबर्ग के कौन्सिल जनरल ऑफ इण्डिया महामहिम भ्राता अशोक कुमार शर्माजी की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। प्रसिद्ध टी.वी. डायरेक्टर इगोर शादाजी ने दादी जी का इन्टरव्यू लिया। इसी अवसर पर दादी जी को "कम्प्यूटर टेस्ट" के लिए भी आमन्त्रित किया गया। प्रो. कोरोटकोव जी ने गैस डिस्चार्ज विजुवलाइजेशन (GDV) तकनीक के द्वारा दादी जी का प्रभामण्डल देखा जो कि आश्चर्यचकित करने वाला था। इस तकनीक से कम्प्यूटर स्क्रीन पर कुछ ही क्षणों में जो प्रभामण्डल दिखाई दिया उसका निरीक्षण करते हुए प्रो. कोरोटकोव जी ने कहा कि उनके अपने जीवन में यह पहला अनुभव है कि वृद्ध आयु होने के बावजूद भी दादीजी का प्रभामण्डल अखण्ड (19^0) स्वस्थ था। उन्होंने देखा कि शक्तिशाली दिव्य प्रभा दादी जी के मस्तक को सुशोभित कर रही है। दादी जी ने, जो ब्रह्माकुमारी संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका हैं, अपना मन्तव्य व्यक्त करते हुए कहा कि इस शक्तिशाली आभा का स्रोत स्वयं सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा हैं और भृकुटी के मध्य विराजमान मुझ आत्मा से उनकी शक्ति प्रगट हो रही है। परमात्मा से संबंध प्रस्थापित करने पर ऐसा प्रभामण्डल प्राप्त होता है। ❋❋❋

सच्ची विजय दशमी....पृष्ठ...01 का शेष

कोई व्यक्ति दस सिर ना सही तो चार-पाँच सिर वाला तो दिखाई देना ही चाहिए था। वास्तव में रावण किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है, ना ही दस सिर वाला कोई मनुष्य होता है। रावण माया का प्रतीक है और इसके दस सिर माया के काम, क्रोध आदि पाँच विकारों की नर में और इन्हीं पाँच विकारों की नारी में प्रवेशता के सूचक हैं। यदि रावण कोई सचमुच का राजा विशेष होता तो उसे एक बार जलाने से ही काम पूरा हो जाता परन्तु यह माया का ही अलंकारिक प्रतीक है इसलिए इसे हर वर्ष जलाते रहते हैं, जब तक कि यह रावण सचमुच जल जाये। दशहरा अथवा 'दश-हरा' का अर्थ है नर-नारी के दस विकारों को हरना। सच्चा दशहरा तभी होता है जब रामेश्वर परमात्मा पतित मनुष्यात्माओं को पुन: पावन अर्थात् निर्विकारी बना कर सच्चे राम-राज्य की पुनर्स्थापना करते हैं। दशहरा को विजय-दशमी भी कहते हैं। विजय-दशमी का भी भावार्थ है दस पर विजय पाना। मनुष्य पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों अर्थात् इन दस इन्द्रियों के द्वारा विकारों के वशीभूत होकर ही विकर्म करता है। अत: विकरों पर विजय पाना ही विजय-दशमी है।

रावण ने कौन-सी सीता को चुराया?

रामायण की कथा से तो साधारणतया यह समझा जाता है कि रावण ने सीता को चुराया था। इस कारण ही राम ने रावण को मारा। परन्तु यदि हम सीता की वास्तविकता को देखें तो क्या सचमुच कोई कन्या किसी खेत से जन्म ले सकती है? वस्तुत: जैसे रावण विकारों का प्रतीक है वैसे ही सीता भी आत्मा का प्रतीक है। यह संसार ही कर्मक्षेत्र अथवा खेत है। आत्मा रूपी सीता इस संसार रूपी क्षेत्र पर आती है अथवा जन्म लेती है शरीर द्वारा कर्म करने के लिए। तुलसीदास जी ने इसी भाव को व्यक्त करते हुए एक स्थान पर राम से कहलवाया है –

इहां हरि निशिचर वैदेही,
खोजत फिरत हम आवत तेही।

भावार्थ है कि यहाँ निशिचर यानि रात्रि में विचरने वाले (अज्ञान की रात्रि में उपस्थित विकार) ही रहते हैं। उन्होंने विदेही अर्थात् आत्मा रूपी सीता को हर लिया है। हम उसी की खोज में हैं। आत्मा ही पंचवटी में निवास करने वाली सीता है जिसको रावण छल लेता है। पंचवटी शरीर को कहा गया है क्योंकि यह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पाँच तत्वों की वाटिका है। इसमें आत्मा रूपी सीता अपने निराकार परमेश्वर राम (की स्मृति) तथा लक्ष्मण के साथ (अर्थात् अपने मन को अपने लक्ष्य में टिका कर) रहती है। परन्तु भौतिकवाद रूपी मारीच धोखे से अर्थात् बनावटी आकर्षण से हम आत्मा रूपी सीताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है और हम उस स्वर्ण मृग अथवा मृग तृष्णा के धोखे में आकर परमात्मा को अपने से दूर कर देती हैं। तब ही निराकार परमात्मा 'राम' हमें लक्ष्मण रेखा में अर्थात् हमारे मन को अपने लक्ष्य की मर्यादा में रहने की आज्ञा देते हैं। यदि हम अपने इस लक्ष्य की स्मृति में रहते हैं कि हमें तो सतयुगी देवता बनना है, हमें तो सर्वगुण सम्पन्न और सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है, तो विकार रूपी अवगुण हमारे समीप नहीं आ सकते। वे भस्म हो जायेंगे। परन्तु यदि हम अपनी आत्मिक स्थिति तथा लक्ष्य की मर्यादा को तोड़ देते हैं तो रावण हमको हर लेता है। पहले रावण प्रत्यक्ष रूप में हमारे सामने नहीं आता वरन् साधु-रूप में आता है। जैसे कि यदि काम विकार नहीं होगा, तो सृष्टि कैसे बढ़ेगी, क्रोध नहीं होगा तो हमारा प्रभाव अथवा रोब कैसे पड़ेगा, मोह नहीं होगा तो बच्चों की पालना कैसे होगी, लोभ नहीं होगा तो गृहस्थी कैसे चलेगी इत्यादि। तो यह विकार हमारे सामने साधु के भेष में आते हैं और हम आत्मा रूपी सीतायें अपने लक्ष्य को भूल कर माया रूपी रावण की कैद में फँस जाती हैं। फिर परमात्मा राम हमें छुड़ाने के लिए आते हैं। परमात्मा 'राम' का मनुष्यात्माओं को विकारों से छुड़ाना ही सच्ची विजयदशमी अथवा दशहरा है।

**

पुरुषोत्तम संगमयुग – सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में हिन्दू धर्म में विचार

– ब्रह्माकुमार रमेश, गामदेवी (मुम्बई)

सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ, इस बारे में सभी धर्मों में धर्मस्थापकों द्वारा या उनके प्रमुख शास्त्रों के लेखकों द्वारा बहुत विचार लिखे गए हैं। इस लेख में, हिन्दू धर्म के अनुसार सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ, इस बारे में विचार करेंगे। हिन्दू धर्म में, आदि शंकराचार्य द्वारा प्रस्थापित अद्वैत मत एक प्रमुख मत है और उस मत के मुताबिक इस सृष्टि में एक ही तत्व है जिससे विभिन्न प्रकार की जो चीजें दिखती हैं उन सबका निर्माण हुआ है। प्रकृति के विभिन्न तत्व, आत्मा तथा पशु-पक्षी आदि सभी उसी एक तत्व के स्वरूप हैं और उनमें समय-प्रति-समय विकास होता है और उनके विकास का अन्तिम लक्ष्य – जो एक ही तत्व अथवा ज्योति है, उसी में ही फिर समा जाना है अर्थात् ज्योति से निर्माण हुआ, सम्पूर्ण बनने के बाद उसी ज्योति में समा जाना। इस प्रकार, अद्वैत मत के अनुसार, एक ही तत्व अनन्त रूप से सृष्टि में व्याप्त है। सृष्टि चलती रहेगी परन्तु जो तत्व वा आत्मा सम्पूर्ण बनी उसका विलीनीकरण ज्योत में हो जाने के बाद, उस आत्मा का पार्ट समाप्त हो जाता है। इसके लिए अद्वैत मत वालों ने एक मिसाल भी दिया है कि नदी के रूप में नदी शाश्वत है परन्तु उसके अन्दर जो पानी की बूँद है, जो समुद्र से बनती है और बारिश द्वारा पहाड़ों पर गिरती है और फिर नदी के रूप में फिर से वही बूँद समुद्र में विलीन होती है। इसी प्रकार सृष्टि नाटक अविनाशी है परन्तु उसमें पुरुषार्थी आत्माएँ सम्पूर्ण बन कर इस सृष्टि रूपी नाटक से विदाई ले सकती हैं – ऐसा इस मत के बारे में हम संक्षिप्त में लिख सकते हैं।

दूसरा मत है – सांख्यशास्त्र का, उनकी विचारधारा के अनुसार यह मान्यता है कि इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर पुरुष, प्रकृति और परमात्मा, इन तीनों का आदि-अनादि और कभी भी अन्त न हो, ऐसा पार्ट चलता रहता है। तीनों ही सृष्टि के आदि में थे और अनादि होने के कारण उन्हों के पार्ट का कभी भी अन्त नहीं होगा। परमात्मा सृष्टि के रचयिता हैं परन्तु परमात्मा ने प्रकृति तत्व जो बना बनाया था, उसी का विभिन्न रूप में निर्माण करके, उसके अन्दर अनादि आत्मा को भेज दिया है और आत्मा अपना पुरुषार्थ करके सम्पूर्ण बन कर परमात्मा के पास पहुँच जाती है। परन्तु जैसे अद्वैत मत में ज्योति में ज्योत समा जाती है, उस प्रकार से समाना नहीं होता है किन्तु जैसे राजा के दरबार में सभी अलग-अलग रत्न होते हैं और कार्य के अनुसार रत्नों को विभिन्न स्थानों पर कारोबार करने के लिए राजा द्वारा भेजा जाता है, उसी प्रकार जब-जब जरूरत पड़ती है तब परमात्मा आत्माओं को धर्मगुरु, धर्मस्थापक या धर्मरक्षक के रूप में इस सृष्टि पर भेजते हैं और जब कार्य बहुत ही कठिन हो जाता है अर्थात् गीता के शब्दों में कहें कि जब धर्म की अतिग्लानि हो जाती है तब परमात्मा स्वयं अवतरित होकर अपना कर्त्तव्य सृष्टि रूपी रंगमंच पर करते हैं। परमात्मा और आत्मा दोनों ही सदाकाल के लिए अलग हैं और इसलिए आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती है और उसी तमोप्रधान आत्मा को परमात्मा सतोप्रधान भी कर सकते हैं। या तो उनकी सुरक्षा के लिए परमात्मा अवतरित होकर अपना दिव्य कर्त्तव्य अर्थात् अवतार रूप में कर्त्तव्य करके

फिर चले जाते हैं और बाद में परमात्मा के उस कर्त्तव्य के द्वारा प्रस्थापित कार्य सृष्टि रूपी रंगमंच पर सुचारू रूप से चलता है। इस मत के मुताबिक भी आत्मा अनादि है परन्तु उसमें कर्मों के आधार पर, पाप-पुण्य के आधार पर उसकी गति होती है। अद्वैत मत में आदि से अन्त तक एक ही तत्व है और सांख्यशास्त्र के अनुसार परमात्मा, प्रकृति और आत्मा तीनों ही अलग-अलग हैं और एक में विलीन नहीं होते हैं।

हिन्दू धर्म में अनेक धर्मग्रंथ हैं जिनके अन्दर सृष्टि के बारे में विचार हुआ है। सभी के बारे में लिखेंगे तो हमारा जो प्रमुख लक्ष्य है 'पुरुषोत्तम संगमयुग का' वह बात रह जायेगी। परन्तु उदाहरण के रूप में 'ब्रह्मसूत्र' और 'मनुस्मृति' ग्रंथ में जो बातें लिखी गई हैं, उन पर हम चर्चा करेंगे। ब्रह्मसूत्र ग्रंथ के ऊपर अद्वैत मत के प्रस्थापक आदि शंकराचार्य का प्रभाव है। यह ग्रंथ सूत्रात्मक रूप में अर्थात् संक्षिप्त रूप में लिखा है। इसलिए हरेक सम्प्रदाय के प्रस्थापकों ने ब्रह्मसूत्र ग्रंथ के सूत्रों के बारे में अपने विचार दिये हैं। जैसे कि शंकराचार्य जी ने बाताया है कि पहले एक परमात्मा था, उसको बाद में सृष्टि रचना करने की इच्छा हुई। इच्छा होने के कारण परमात्मा जो निर्गुण, निराकार था वह बदल कर ईश्वर का रूप हुआ। क्योंकि परमात्मा को इच्छा हो नहीं सकती। परन्तु परमात्मा को जब इच्छा हो गई तो वही इच्छावान परमात्मा अर्थात् ईश्वर हुए जिन्होंने प्रकृति की रचना की।

तब प्रश्न उठता है कि परमात्मा को सृष्टि की रचना करने की इच्छा क्यों हुई ? उसके जवाब में अद्वैत मत की यह मान्यता है कि यह प्रश्न हम परमात्मा को नहीं पूछ सकते हैं क्योंकि वो मालिक है। जैसे घर में जो मालिक होता है उसको रोटी मिले और उसकी इच्छा हो कि लड्डू या पराठा मिले तो यह इच्छा क्यों हुई, यह प्रश्न नहीं उठा सकते क्योंकि वह मालिक है। आगे उन्होंने लिखा है कि यह सृष्टि परमात्मा की लीला है। लीला करने के लिए परमात्मा ने विभिन्न रूप धारण किए परमात्मा की यह लीला है, ऐसा समझ कर चलने से सृष्टि के कारोबार को देखेंगे तो कभी भी हमारी अवस्था हिल नहीं सकेगी। इस प्रकार का मानना इस मत में है।

मनुस्मृति में इसी प्रकार की मान्यता है कि परमात्मा एक दिव्य सुवर्ण गर्भ स्वरूप तेजस्वी पहले था, उसने ही लीला करने के लिए समाज की रचना की परन्तु खुद उनसे न्यारे रहे और जिस तन में उनका अवतरण हुआ था, उसी को कारोबार सौंप कर, उनका नाम नारायण रख कर परमात्मा ने विश्राम कर लिया और उसके बाद समाज की जो रचना हुई उसमें व्यवस्था बनाने हेतु कानून का निर्माण हुआ। इस प्रकार मनुस्मृति में, समाज की विभिन्न व्यवस्थाओं में किस प्रकार के कानून हों, उस पर विचार किया गया है।

ऊपर हमने संक्षिप्त में सृष्टि रंगमंच पर रचना के बारे में प्रमुख विचारधाराएँ बताईं, इन विचार-धाराओं में कइयों ने अनेक मत बनाए या लिखे हुए हैं। इसलिए किसी मत का गलती से विचार भंग या मर्यादा भंग हुआ हो तो पाठकगण अपनी विचारधारा के मुताबिक इन मतों को समझ लें। क्योंकि मेरा विचार इस लेखमाला लिखने के पीछे- 'संगमयुग पाँचवा युग है, जिसमें सृष्टि परिवर्तन का कार्य होता है' – यही सिद्ध करना है। अगले लेख में, सृष्टि-नाटक अनादि होने के कारण कैसे पुनरावृत्ति को प्राप्त करता है, उसके बारे में लिखेंगे।

अपकारी पर उपकार करना सीखो तो सत्कार मिलेगा

शुद्ध संकल्पों का महत्त्व

– ब्र.कु. ममता, पानीपत

यूँ तो जीवन हर कोई बिताते हैं
पर नाम उन्हीं का होता है
जो शुद्ध संकल्पों से कुछ करके जाते हैं।

इस संसार में अगर अमूल्य खजाना है तो वह है 'संकल्प शक्ति का'। संकल्पों के द्वारा इंसान, चाहे तो क्या नहीं कर सकता? हम चाहें तो संकल्पों के द्वारा अपने को खुश कर सकते हैं और चाहें तो संकल्पों के द्वारा अपना गला भी घोंट सकते हैं। संकल्प के द्वारा हम अपना और दूसरों का परिवर्तन कर सकते हैं। जो कार्य संकल्पों से होता है वह वाणी से नहीं हो सकता। एक बार एक समुद्र को, एक संन्यासी और कुछ शरारती लड़के नाव से पार कर रहे थे। लड़के संन्यासी को बार-बार तंग कर रहे थे लेकिन संन्यासी शान्त होकर बैठा रहा। उन लड़कों ने मिल कर संन्यासी को समुद्र में गिराने की भी कोशिश की परन्तु वह चुपचाप बैठा रहा। तभी एक गुप्त आवाज आई कि हे संन्यासी, अगर तुम चाहो तो इसी समय इनको श्राप लग सकता है। ये अभी-अभी यहीं भस्म हो जायेंगे। लेकिन संन्यासी ने उस गुप्त आवाज को गुप्त सन्देश दिया कि ''ये लड़के नहीं बल्कि इनके बुरे संकल्प भस्म हो जाएँ।'' ऐसा ही हुआ।

लड़के अपने बुरे व्यवहार की क्षमा याचना करते हुए संन्यासी के चरणों में गिर पड़े। तो देखिए यह है 'संकल्प शक्ति'। आज संकल्प तो हैं लेकिन श्रेष्ठ संकल्प नहीं हैं। श्रेष्ठ संकल्प होते तो आज संसार की हालत बेहतर होती। एक कहावत है कि जब हम मुसीबतों को हँसते-हँसते झेलते हैं तो वे भाग जाती हैं। जब उनके प्रति ज्यादा विचार करते हैं तो वे और अधिक बढ़ती जाती हैं। (When you weep your problems heap, when you smile your problems concile, when you laugh your problems are off.)

महर्षि दयानन्द के बहुत से विरोधी थे। जब वे महर्षि का कुछ नहीं बिगाड़ पाए तो अन्त में उन्होंने एक वेश्या के द्वारा गलत कर्म कराने का षड्यंत्र रचा। वेश्या जब महर्षि के समीप गई तो उसे विचार आया कि इस साधु ने मेरा क्या बिगाड़ा है, जो मैं इसके लिए ऐसा करूँ? उसे महसूस हुआ जैसे कि इस महात्मा के दर्शन मात्र से ही उसके आधे पाप धुल गए हैं, वह उनके चरणों में गिर गई। फिर तो उसने महसूस किया कि जैसे सारे पाप धुल गए हैं। यह है विचारों का प्रभाव। किसी का एक विचार सारे समाज को हिला कर रख देता है। जब भारत और पाकिस्तान अलग नहीं हुए थे तब एक बार महात्मा गाँधी जी के साथ अंग्रेज लोगों ने रेल-यात्रा के दौरान दुर्व्यवहार किया था। तब गाँधी जी के मन में विचार आया कि चाहे कुछ भी हो जाए मैं इस भेदभाव को मिटा कर रहूँगा। उन्होंने यह विचार जब अपने दोस्तों को सुनाया तो वे हँसने लगे। लेकिन गाँधी जी ने संकल्प को पूरा कर दिखाया। अगर हम अपने संकल्पों के अधिकारी हैं तो समझो कि बड़े खुशनसीब हैं। संकल्पों का असर शीघ्र होता है, वाणी का इतना नहीं।

एक बार की बात है कि एक शिक्षक सिगरेट पीता था। उसने देखा कि तीसरी कक्षा का एक विद्यार्थी भी छिप कर सिगरेट पी रहा है परन्तु उसमें रोकने की हिम्मत नहीं हुई। उसने सोचा कि जब मैं ही सिगरेट पीता हूँ तो इसको रोकूँ कैसे? उसने निश्चय कर लिया कि मैं सिगरेट छोड़

कर ही रहूँगा। कुछ दिन बाद वह तीर्थ स्थान पर गया और वहाँ सिगरेट का त्याग कर आया। वापस आने के पाँच दिन बाद उसने उस बच्चे को बुलाया और कहा कि सिगरेट पीना बहुत बुरा है। बच्चा समझ गया। उसने कहा, श्रीमान जी, मैं पहले पीता था लेकिन अब पाँच दिन हो गए हैं मैंने भी सिगरेट पीना छोड़ दिया है। तो देखा आपने, मानव को कहने से पहले स्वयं करना चाहिए तभी दूसरे भी अनुकरण करने लग जायेंगे। तभी तो कहते हैं कि वाणी का असर इतना नहीं होता जितना कि संकल्पों का होता है।

हमारे मन के अन्दर बहुत प्रकार के विचार चलते हैं जैसे कि सकारात्मक, नकारात्मक, व्यर्थ विचार आदि। **विचारों का सिलसिला तो चलता ही रहता है लेकिन यह हमारे अपने हाथ में है कि हम उनको कैसा बनाएँ। हम चाहें तो नकारात्मक परिस्थिति में भी सकारात्मक सोच सकते हैं।** एक बार एक दर्जी के साथ दुर्घटना हो गई। उसका बायाँ हाथ कट गया। पत्नी ने नकारात्मक सोचा और दुखी होकर कहने लगी कि बहुत बुरा हुआ। लेकिन पति की सोच सकारात्मक बनी रही, उसने कहा कि शुक्रिया भगवान का जो एक हाथ ही कटा है और वह भी बायाँ हाथ। दायाँ हाथ तो बचा है और सबसे बड़ी बात जिन्दगी तो बची है। इंसान संकल्पों के द्वारा जो चाहे कर सकता है। कार्य की शुरूआत से पहले मन संकल्प करता है। हमें परमात्मा द्वारा संकल्प शक्ति मिली है। हम श्रेष्ठ संकल्प के जरिए जीवन में सफलताओं को अर्जित कर सकते हैं और महान बन सकते हैं। ☐☐

ज्ञान-पद

— रामनरेश आर्य (पत्रकार), हरदोई

(1)

विश्व-परिवर्तन के निमित्त, ज्ञानामृत वरदान।
अवगुण से मुक्ति मिले, होवे नव-निर्माण।।
होवे नव-निर्माण, राष्ट्र सब विकसित होवें।
मिला वास्तविक सत्य, न कोई किंचित रोवे।।
आशायें सब पूर्ण, मिल रही ईश्वरीय शिक्षा।
शिव है मेरे साथ, नहीं अब कोई इच्छा।।
नियमित कर अभ्यास, 'संगीत' है करता नर्तन।
यह राजयोग आधार, करेगा विश्व-परिवर्तन।।

(2)

शिव बाबा की ज्ञान-वर्षा से, खुश है सब परिवार।
अपनेपन की भावना, रखो मिलेगा प्यार।।
रखो मिलेगा प्यार, बुराई बिल्कुल त्यागो।
घर को 'आश्रम' समझ, न कोई जंगल भागो।।
सबके हितकारी बन, निज पार्ट श्रेष्ठ निभाओ।
शिव-दर्शन के शुभेच्छु, नजदीकी आश्रम (केन्द्र) में जाओ।।
जीवन जिओ पवित्र, न बनना ढोंगी-बाबा।
स्वर्णिम दिव्य जीवन, बनायेंगे शिव बाबा।।

1. देहली (चाँदनी चौक)- सर्वोच्च न्यायालय के जज भ्राता अशोक भान को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. बिमला बहन। **2. बरेली**- विधान सभा उपाध्यक्ष भ्राता राजेश अग्रवाल को ईश्वरीय प्रसाद देती हुई ब्र.कु. पार्वती बहन। **3. गोण्डा**- उत्तर प्रदेश के चिकित्सा एवं शिक्षा राज्यमन्त्री भ्राता विनोद कुमार को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य समूह चित्र में। **4. देहली (सरूप नगर)**- देहली के श्रम-उद्योग मन्त्री भ्राता मंगतराम सिंघल को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. शारदा बहन। **5. देहली (स्वास्थ्य विहार)**- ब्र.कु. उर्मिला बहन से राखी बँधवाने के पश्चात् देहली के वित्तमन्त्री भ्राता अशोक कुमार वालिया जी वरदान लेते हुए। **6. देहली (मजलिस पार्क)**- भक्ति संगीत सम्राट भ्राता नरेन्द्र चंचल को राखी बाँधने के पश्चात् वरदान-कार्ड का अर्थ समझाती हुई ब्र.कु. राजकुमारी बहन। **7. देहली (लॉरेन्स रोड)**- सांसद भ्राता सज्जन कुमार को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. लक्ष्मी बहन। **8. मोदी नगर**- सांसद भ्राता सुरेन्द्र प्रकाश गोयल को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुई ब्र.कु. विनोद बहन। **9. देहली**- सांसद भ्राता बापू हरि चौरे को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. सविता बहन। **10. देहली**- सांसद भ्राता सुरेश भारद्वाज को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. सविता बहन। **11. नौएडा**- दरगाह हजरत निजामुद्दीन औलिया के सज्जदानशीन पीर ख़्वाजा अहमद निजामी सय्यद बुखारी को ब्र.कु. सुनीता बहन तथा ब्र.कु. प्रेमप्रकाश भाई राखी-सन्देश देते हुए। **12. देहली (दिलशाद गार्डन)**- जज भ्राता संजीव कुमार मल्होत्रा की धर्मपत्नी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन।

1. देहली (कालकाजी)- सी.आर.आर.आई. के निदेशक भ्राता पी.के. सिकदर को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. प्रभा बहन। **2. शमसाबाद**- डॉ. भ्राता राजेन्द्र सिंह को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. रीतू बहन। **3. पीलीभीत**- एस.डी.एम. भ्राता सुरेश कुमार राठौड़ को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. प्रीति बहन। **4. काशीपुर (बरेली)**- बार कौंसिल के अध्यक्ष भ्राता धर्मवीर शर्मा को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. चन्द्रावती बहन। **5. फर्रुखाबाद (अढतियान)**- मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. भ्राता रामजी लाल को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. मन्जू बहन। **6. देहली (राजोरी गार्डन)**- पार्षद की धर्मपत्नी बहन आर्य जी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. शक्ति बहन। **7. आगरा (सेक्टर 7)**- जेल अधीक्षक भ्राता सन्तोष श्रीवास्तव को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. सरिता बहन। **8. हल्द्वानी**- जिलाधिकारी भ्राता चनररामजी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. नीलम बहन। **9. हापुड़ (सिम्भावली)**- कर्नल बी.एस. लाखड़ा जी को ईश्वरीय सौगत देती हुई ब्र.कु. स्वर्णा बहन। **10. गाजीपुर**- जिलाधिकारी भ्राता के.एम. पाण्डे को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. निर्मला बहन। **11. देहली (खानपुर)**- अखिल भारतीय स्पाइसिस आयात-निर्यात-वितरण संघ के अध्यक्ष भ्राता रतनलाल अग्रवाल को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. आशा बहन। **12.देहली (स्वर्ण पार्क)**- विधायक डॉ. भ्राता बिजेन्द्र सिंह को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. शक्ति बहन।

1. **देहली (पाण्डव भवन)**- सार्वजनिक कार्यक्रम में शान्ति की कामना करते हुए दीप प्रज्वलित कर रहे हैं ब्र.कु. पुष्पा बहन, संस्कार भारती के संचालक योगेन्द्र बाबाजी, प्राचार्या डॉ. बहन मालती जी, भ्राता अरविन्द जी तथा अन्य। 2. **गुड़गाँव (पालम विहार)**- विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों की जानकारी देती हुई ब्र.कु. सुदेश बहन। 3. **फतेहगढ़**- रक्षा-बन्धन कार्यक्रम में सिख लाइट इनफेन्ट्री के ब्रिगेडियर भ्राता पी.एस. सिसोदिया जी अपने विचार व्यक्त करते हुए। साथ में हैं ब्र.कु. सुमन बहन तथा आकाशवाणी संवाददाता भ्राता प्रमोद कुदेशिया। 4. **मुरादाबाद**- आंगनवाड़ी कार्यकत्ताओं के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. मन्जू बहन, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. अलका बहन तथा अन्य समूह चित्र में। 5. **मिरज़ापुर**- जिलाधिकारी भ्राता सभाराज सिंह को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. बिन्दु बहन। 6. **जट्टारी**- धार्मिक सेवा अध्यक्ष भ्राता दिनेश पालीवाल को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. कृष्णा बहन। 7. **हाथरस (आनन्दपुरी)**- अनाथालय में बच्चों को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. शान्ता बहन। 8. **एटा**- वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक भ्राता आनन्द स्वरूप भटनागर को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. शोभा बहन। 9. **कानपुर (कल्याणपुर)**- डॉ. आर.एस. त्रिपाठी, कार्यकारी निदेशक, भारत सरकार उद्यमी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. उमा बहन। 10. **नई देहली (संगम विहार)**- एस.एच.ओ. भ्राता अवतार सिंह परमार को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. कमलेश बहन।

1. नई देहली (जैतपुर)- श्री श्री 108 भागवाचार्य स्वामी धर्मदेव जी महाराज को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. ऊषा बहन। 2. नई देहली (लोधी रोड)- विधायक भ्राता अशोक आहूजा को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुई ब्र.कु. गिरिजा बहन। 3. रगड़गंज (गोण्डा)- विधायक भ्राता वैद्यनाथ दूबे को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. सविता बहन। 4. देहली (महरोली)- विधायक भ्राता बलराम तँवर को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अनीता बहन। 5. गाजियाबाद (गरिमा गार्डन)- विधायक मदन भैया को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. उर्मिला बहन। 6. धामपुर (काशीपुर)- विधायक डॉ. भ्राता इन्द्रदेव को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. मधु बहन। 7. इटावा (फ्रेन्डस कॉलोनी)- विधायिका बहन सुख देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई ब्र.कु. मंगला बहन। 8. इटावा (नेविल रोड)- आध्यात्मिक स्नेह-मिलन में मंच पर विराजमान हैं प्रधानाचार्या बहन चन्द्रमुखी दुबे, ब्र.कु. ज्योत्सना बहन तथा विधायक भ्राता महेन्द्र सिंह राजपूत। 9. आगरा (छीपी टोला)- पुलिस के उप-महानिरीक्षक भ्राता आलोक प्रसाद, ब्र.कु. अश्विना बहन से राखी बँधवाने के पश्चात् वरदान सुनते हुए। 10. नई देहली (वसन्त कुञ्ज)- भूमि आयुक्त भ्राता आर.के. सिंह को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. सरोज बहन। 11. फर्रुखाबाद (कमालगंज)- विधायक भ्राता जमालुद्दीन सिद्दी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. शोभा बहन। 12. नई देहली (सीरी फोर्ट)- इंडियन एयर लाइन्स के उप-प्रबन्ध निदेशक भ्राता टी.एस. चन्द्रशेखर को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. संगीता बहन।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : shantivan@bkedu.net (Ph. No. (02974)- 228125, 228126 gyanamrit@vsnl.com

कटक- उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता सुजीत बर्मन राय को राखी बांधती हुई ब्र.कु. कमलेश बहन। 2. **बैंगलोर (कुमारा पार्क)**- कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता आर.के. जैन को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरोजा बहन। 3. **जयपुर**- राजस्थान की मुख्यमन्त्री बहन वसुन्धरा राजे सिंधिया को राखी बांधती हुई ब्र.कु. सुषमा बहन। 4. **गोवा**- गोवा के राज्यपाल महामहिम भ्राता एस.सी. जमीर को राखी बांधती हुई ब्र.कु. शोभा बहन। 5. **भुवनेश्वर**- उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता एम.एम. राजेन्द्रन को राखी बांधने के पश्चात् ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. संगीता तथा ब्र.कु. कल्पना उनके साथ। 6. **देहली**- देहली के लेफ्टिनेंट गवर्नर महामहिम भ्राता बी.एल. जोशी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. चक्रधारी बहन। 7. **पाण्डीचेरी**- पाण्डीचेरी के लेफ्टिनेंट गवर्नर महामहिम भ्राता एम.एम. लाखेरा को राखी बांधती हुई ब्र.कु. जयलक्ष्मी बहन। 8. **पुलीवेंदुला**- आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री भ्राता वाई.एस. राजशेखर रेड्डी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. वरलक्ष्मी बहन। 9. **उदमलपेट**- भारत के वित्तमन्त्री भ्राता पी. चिदम्बरम् को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. जानकी बहन। 10. **पाराद्वीप**- उड़ीसा के मुख्यमन्त्री भ्राता नवीन पटनायक को राखी बांधती हुई ब्र.कु. मानसी बहन। 11. **डुंगरपुर**- महाराज कुँवर हर्षवर्धन सिंह को राखी बांधने के पश्चात् युवरानी प्रियदर्शिनी जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. विजय लक्ष्मी बहन। 12. **बैंगलोर (सिटी सेन्टर)**- कर्नाटक के मुख्यमन्त्री भ्राता धर्मसिंह जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. पदमा बहन।
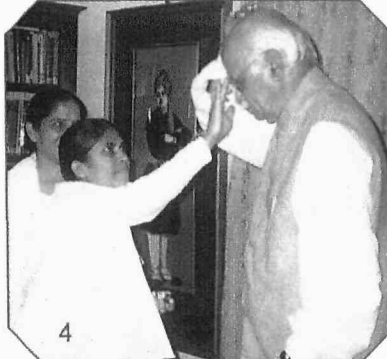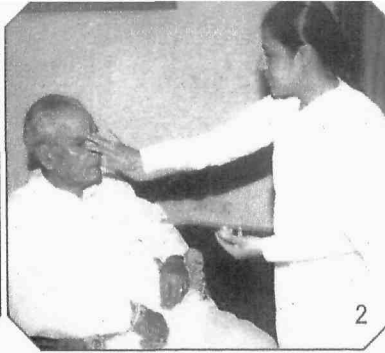
1. नई देहली- कांग्रेस अध्यक्षा बहन सोनिया गांधी जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. आशा बहन। **2. नई देहली**- भारत के उप-राष्ट्रपति महामहिम भ्राता भैरोंसिंह शेखावत को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. मन्जू बहन। **3. नई देहली**- भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री भ्राता अटल बिहारी बाजपेयी जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. मन्जू बहन। **4. नई देहली**- भारत के पूर्व उप-प्रधानमन्त्री भ्राता लालकृष्ण आडवाणी को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. सविता बहन। **5. नई देहली**- भारत के गृहमन्त्री भ्राता शिवराज पाटिल को राखी बांधती हुई ब्र.कु. आशा बहन। **6. इन्दौर (ओम शान्ति भवन)**- म.प्र. के मुख्यमन्त्री भ्राता बाबूलाल गौर को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. छाया बहन तथा ब्र.कु. निर्मला बहन। **7. शिमला**- हि.प्र. के मुख्यमन्त्री राजा वीरभद्र सिंह जी को राखी बांधती हुई ब्र.कु. कृष्णा बहन। **8. होशियारपुर**- पंजाब के मुख्यमन्त्री कैप्टन अमरेन्द्र सिंह को ईश्वरीय साहित्य देती हुई ब्र.कु. राजकुमारी बहन। **9. मुम्बई (विले पारले)**- सांसद तथा फिल्म कलाकार भ्राता गोविन्दा, ब्र.कु. बिन्दु बहन तथा ब्र.कु. जिगिशा बहन से राखी बंधवाने के पश्चात् वरदान-कार्ड का अवलोकन करते हुए। **10. आबू रोड (शान्तिवन)**- वैज्ञानिक तथा अभियन्ता सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई जी, ब्र.कु. मोहन सिंघल जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन, नेपाल इंजीनियरिंग कौन्सिल के अध्यक्ष भ्राता केशव बहादुर शाह तथा अन्य। **11. देहली (ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर)**- गुड़गाँव के उपायुक्त भ्राता गुलाब सिंह सरोज, ज्ञान चर्चा के बाद ब्र.कु. शुक्ला बहन, ब्र.कुं. राजरूप फुलिया तथा ब्र.कु. मधु बहन के साथ।